



जीवन वृत्त

नाम : डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय

पद : □□□□□□□□ प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई 400098

ई-मेल : dr.krupadhyay@gmail.com

जन्म – तिथि : 25/04/1968

जन्म – स्थान : घोरका तालुकदारी, शिवगढ़ बिंदागंज, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

शैक्षणिक योग्यता : एम.ए., पी.एच.डी, सेट

पोस्ट डॉक्टरल : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्येतावृत्ति (2001)

शोधकार्य : के अंतर्गत 'पाश्चात्य काव्य चिंतन के विविध आन्दोलन' विषय पर संपन्न। 'हिंदी आचार्य कवियों का काव्यशास्त्रीय चिंतन' पर यू.जी.सी. द्वारा प्रदत्त बृहद शोध प्रकल्प संपन्न।

अध्यापन अनुभव : 29 वर्ष। प्रशासकीय अनुभव : 06 वर्ष।

प्रकाशित पुस्तकें

क्र.	पुस्तकें	प्रकाशन, संस्करण एवं आई.एस.बी.एन
1	जयशंकर प्रसाद : महानता के आयाम	राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण-2022, आई.एस.बी.एन. 978-93-91950-68-2
2.	कथा साहित्य का पुनर्पाठ	यश पब्लिकेशन्स, 1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा दिल्ली -11 032 प्रथम संस्करण- 2021 आई.एस.बी.एन.-978-93-85696-33-6
3.	मध्यकालीन कविता का पुनर्पाठ	राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी-17, जगतपुरी, दिल्ली – 110 051 प्रथम संस्करण- 2021 आई.एस.बी.एन.-978-81-8361-990-5
	पाश्चात्य काव्य चिंतन (आभिजात्यवाद से उत्तरआधुनिकतावाद तक)	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 तृतीय संशोधित संस्करण – 2016 आई.एस.बी.एन. 978-81-8361-9
4.	हिंदी का विश्व- सन्दर्भ (भाषा विमर्श)	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 द्वितीय संशोधित संस्करण – 2016 आई.एस.बी.एन. 978-81-8361-2
5.	साहित्य और संस्कृति के सरोकार	लोकवाणी संस्थान, डी - 585, ए - अशोक नगर, शाहदरा, दिल्ली – 110093 प्रथम संस्करण – 2016 आई.एस.बी.एन. 978-93-81487-74-7
6.	सृजन के अनछुए सन्दर्भ	लोकवाणी संस्करण, डी - 585, ए - अशोक नगर, शाहदरा, दिल्ली – 110093 प्रथम संस्करण – 2015 आई.एस.बी.एन. 978-93-81487-81-5
7.	पाश्चात्य काव्य- चिंतन	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 7/31, अंसारी रोड,

		दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 द्वितीय छात्र संस्करण – 2016 आई.एस.बी.एन. 978-81-8361-542-2
8.	बलैकहोल – विमर्श (आलोचना)	क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 15 – सिद्धार्थ नगर, कानपुर – 208016 आई.एस.बी.एन. 978-93-83637-47-8
9.	पाश्चात्य काव्य चिंतन (आलोचना)	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 द्वितीय संशोधित संस्करण – 2026 आई.एस.बी.एन. 978-81-8361-541-9
10.	पाश्चात्य काव्य चिंतन (काव्यशास्त्र)	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 प्रथम छात्र संस्करण – 2012 आई.एस.बी.एन. 978-81-8361-542-6
11.	आवाँ विमर्श	सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 प्रथम संस्करण – 2010, आई.एस.बी.एन. 978-93-804500-4-5
12.	हिंदी का विश्वसंदर्भ (आलोचना)	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 प्रथम संस्करण – 2008 आई.एस.बी.एन. 978-81-8361-1
13.	आधुनिक कविता का पुनर्पाठ (आलोचना)	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 प्रथम संस्करण – 2008 पहली आवृत्ति – 2013 आई.एस.बी.एन. 978-81-8361-256-6
14.	विविधा (आलोचना)	भास्कर पब्लिकेशन्स, 73, मंगला विहार-II, कानपुर – 208015 प्रथम संस्करण – 2008 आई.एस.बी.एन. 978-81-905109-6-6
15.	हिंदी कथा साहित्य का पुनर्पाठ (आलोचना)	भास्कर पब्लिकेशन्स, 73, मंगला विहार-II, कानपुर – 208015 प्रथम संस्करण – 2008 आई.एस.बी.एन. 978-81-905109-6-7
16.	पाश्चात्य काव्य चिंतन (काव्यशास्त्र)	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 प्रथम संस्करण – 2003 आई.एस.बी.एन. 81-7119-750-7
17.	मध्यकालीन काव्य : चिंतन और संवेदना (आलोचना)	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 प्रथम संस्करण – 2003 आई.एस.बी.एन. 81-7119-764-7
18.	आधुनिक हिंदी कविता में काव्यचिंतन (काव्यशास्त्र)	क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 104, ए/118, रामबाग, कानपुर-208012

		प्रथम संस्करण – 1991
19.	साहित्यकार बेकल: संवेदना एवं शिल्प (आलोचना)	क्रांतिमन्यु प्रकाशन, मेरठ (उत्तर प्रदेश) प्रथम संस्करण – 1995
20.	सर्जना की परख (आलोचना)	क्रांतिमन्यु प्रकाशन, मेरठ (उत्तर प्रदेश) प्रथम संस्करण – 1996

संपादित पुस्तकें

क्र.	पुस्तकें	प्रकाशन, संस्करण एवं आई.एस.बी.एन
1.	चित्रा मुद्रल संचयन	सामयिक बुक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण 2020, आई.एस.बी.एन- 978-81-936749-3-2
2.	गोरखबानी	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., जगतपुरी दिल्ली-110051 आई.एस.बी.एन- 978-81-8361-974-5 प्रथम संस्करण 2020
3.	उद्भ्रांत का काव्य : बहुआयामी विमर्श (आलोचना)	यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली - 110032 आई.एस.बी.एन. 978-93-81130-43-8
4.	अप्रतिम भारत	प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली – 110002, प्रथम संस्करण – 2018 आई.एस.बी.एन. 978-93-5266-810-6
5.	सृजन और संदर्भ	लोकवाणी संस्थान, डी-585 ए, गली नंबर 3, शाहदरा, दिल्ली – 110 093 प्रथम संस्करण – 2018 आई.एस.बी.एन. 978-93-81487-43-3
6.	गुरु जाम्भोजी की वाणी में लोक मंगल	जांभाणी साहित्य अकादमी, सेक्टर-1, ई-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर (राजस्थान) प्रथम संस्करण – 2017 आई.एस.बी.एन. 978-93-83415-29-8
7.	हिन्दी साहित्य मूल्यांकन और मूल्यांकन (आलोचना)	देशभारती प्रकाशन, जी-851, गली नंबर-3, अशोक नगर, शाहदरा, दिल्ली – 110093 प्रथम संस्करण – 2012 आई.एस.बी.एन. 978-93-81488-16-4
8.	वक्रतुण्ड मिथक की समकालीनता (आलोचना)	अमन प्रकाशन, 104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर – 208 012 (उत्तर प्रदेश) प्रथम संस्करण – 2012 आई.एस.बी.एन. 978-93-83637-47-8
9.	साहित्य साधक (आलोचना)	लोकवाणी संस्थान, डी-585 ए, गली नंबर-3, शाहदरा, दिल्ली – 110093 प्रथम संस्करण – 2012 आई.एस.बी.एन. 978-93-81487-27-3
10.	डॉ. शोभनाथ यादव: सृजन एवं सरोकार	प्रगतिशील आकल्प प्रकाशन, जोगेश्वरी-पूर्व, मुंबई 400060 प्रथम संस्करण – 2011

11.	शोभनाथ यादव की सौंदर्यधर्मी कविताएँ (आलोचना)	नमन प्रकाशन, 423/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 प्रथम संस्करण – 2007 आई.एस.बी.एन. 81-8129-128-
12	कुछ शब्द कुछ सपने	(आलोचना) अनामिका प्रकाशन, प्रयागराज-211006 आई.ई.एस.बी.एन. 978-93-95966-98-6

सह-सम्पादित पुस्तकें

1. राष्ट्रभाषा रश्मि, 2005, (12वीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक)
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, 7 नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मार्ग, मुंबई 400002
आई.एस.बी.एन. 81-902-4352-7
2. राष्ट्रभाषा प्रभा, 2005, (12वीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक)
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, 7 नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मार्ग, मुंबई 400002
आई.एस.बी.एन. 81-902-4352-7
3. काव्य, 2005 (स्नातक स्तर की पाठ्य पुस्तक)
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, 7 नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मार्ग, मुंबई 400002
आई.एस.बी.एन. 81-902-4352-7
4. युवक भारती, 2007 (12वीं कक्षा एस.एस.सी. बोर्ड की पाठ्य पुस्तक)
महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड, पुणे द्वारा प्रकाशित, पुणे – 411 006
5. कल्पतरु, 2009, (स्नातक स्तर की पाठ्य पुस्तक)
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, 7 नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मार्ग, मुंबई 400002
आई.एस.बी.एन. 81-902-4352-10

विश्वकोशों का सह-लेखन प्रकाशन, संस्करण

1. मानवमूल्यपरक शब्दावली का विश्वकोश (5 खंड, 2009)
सरुप एंड संस 4740 / 23, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली – 110002
आई.एस.बी.एन. 81-7625-621-8-12
2. तुलनात्मक साहित्य का विश्वकोश (प्रथम खंड: सिद्धांत एवं अनुप्रयोग), 2008
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के सम्मान एवं पुरस्कार

1. महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2005 (राष्ट्रीय)
2. हिन्दी सेवा सम्मान, 2006 (राष्ट्रीय)
3. पं. दीन दयाल उपाध्याय आदर्श शिक्षक सम्मान, 2007 (राष्ट्रीय)
4. आशीर्वाद राजभाषा सम्मान, 2009 (राष्ट्रीय)
5. विश्व हिन्दी सेवा सम्मान, 2010 (अंतरराष्ट्रीय)
6. महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी का आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार, 2011 (राष्ट्रीय)
7. आशीर्वाद राजभाषा पुस्कार, 2012 (राष्ट्रीय)
8. शिक्षक भारती संस्था द्वारा 26 जनवरी 2013 को 'शिक्षक भारती' सम्मान
9. मुम्बई विश्वविद्यालय का सर्वोत्तम शिक्षक पुरस्कार, (2013-2014)
10. हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का सम्मेलन सम्मान, 2013-2014 (राष्ट्रीय)
11. जीवन्ती फाउंडेशन का साहित्य गौरव सम्मान, 2014-2015 (राष्ट्रीय)
12. भारती गौरव सम्मान, 2015-2016 (राष्ट्रीय)

13. व्यंग्य -यात्रा सम्मान, 2015-2016 (राष्ट्रीय)
14. मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा समिति सम्मान, 2017-2018 (राष्ट्रीय)
15. मैथिल कोकिल सम्मान, 2018-2019 (राष्ट्रीय)
16. साहित्य भूषण सम्मान, 2018-2019 (राष्ट्रीय)
17. महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी का पदमश्री अनंत गोपाल शेवड़े सम्मान, 2018-2019 (राष्ट्रीय)
18. पुस्तक भारती संस्थान, कनाडा का प्रो. नीलू गुप्ता सम्मान, 2019-2020 (अंतरराष्ट्रीय)
19. स्वदेश स्मृति सम्मान 2021 (राष्ट्रीय)
20. महात्मा गांधी शिखर प्रतिभा सम्मान 2022 (राष्ट्रीय)
21. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सम्मान 2021 (राष्ट्रीय)
- 22- अमलतास सृजन सम्मान 2023 (राष्ट्रीय)
- 23- आचार्य रामचंद्र शुक्ल सम्मान, हरियाणा (राष्ट्रीय)।
24. हिंदी विश्व कीर्ति कृति सम्मान, विश्व हिंदी संगठन, नई दिल्ली 2023 (अंतरराष्ट्रीय)
25. विश्व हिंदी अलंकरण सम्मान,(2024), अंतरराष्ट्रीय, मातृभाषा उन्नयन संस्थान, इंदौर ।

शोध निर्देशन: अब तक 35 छात्र पीएच.डी. तथा 53 छात्र एम.फिल उपाधि प्राप्त।

मेरे निर्देशन में पीएच.डी. उपाधि प्राप्त विद्यार्थी

क्र.	नाम	शोध-विषय	वर्ष
1	लालजी यादव	भारतीय रेल में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन का विश्लेषणात्मक अध्ययन	2006
2	जे.पी. बघेल	स्वातंत्र्योत्तर ब्रजमंडल के कवियों की कविताओं का अनुशीलन	2007
3	वेदप्रकाश दुबे	हिन्दी समीक्षा के विकास में डॉ. शीताशुं का योगदान	2008
4	ऋषिकेश मिश्र	आधुनिक हिन्दी साहित्य में रामकाव्य का अनुशीलन	2008
5	रश्मि बत्रा	अमृता प्रीतम और कृष्णा सोबती के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	2009
6	बिकेश सिंह	सुनीता जैन की कविताओं को अनुशीलन	2009
7	दृगेश यादव	डॉ. हरिवंशराय बच्चन के गद्य साहित्य का अनुशीलन	2010
8	सीमा भूतड़ा	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा का अनुशीलन	2010
9	ऊषा गुप्ता	बैकिंग क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन का विश्लेषण	2010
10	जीतेन्द्र पाण्डेय	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	2010
11	शिवपूजन लाल	उद्भ्रांत के मिथकीय काव्य का अनुशीलन	2010
12	निर्मला जांगले	ज्ञानेंद्रपति की कविताओं का अनुशीलन	2011
13	ज्योति गजभिये	नासिरा शर्मा के कथा साहित्य का अनुशीलन	2011
14	प्रमोद पाण्डेय	साठोत्तरी कवि मधुप शर्मा की कविताओं को विश्लेषणात्मक अध्ययन	2012
15	रेणू राय	चित्रा मुद्गल के उपन्यास साहित्य का विश्लेषण	2013
16	माधुरी सिंह	चित्रा मुद्गल और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	2014

17	भारती एन.के.	21वीं सदी के हिन्दी सिनेमा का बदलता परिदृश्य	2014
18	सचिन गोविंद सादरे	चंद्रकांत देवताले की कविताओं का अनुशीलन	2016
19	निशा सिंह	21वीं सदी के प्रमुख उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अनुशीलन	2016
20	वृजनारायण रामसागर दारोगा	हिन्दी समीक्षा परिदृश्य और चंद्रकांत बांदिवडेकर	2016
21	सावित्री राधेश्याम सिंह	बैकिंग का बदलता स्वरूप प्रौद्योगिकीय चुनौतियाँ और हिंदी	2016
22	सुशील कृष्ण गोरे	बैकिंग एवं वित्तीय संस्थाओं में राजभाषा हिन्दी और अनुवाद की चुनौतियाँ	2016
23	दिनेश कुमार	रामकाव्य परंपरा और रामकथा कल्पलता	2017
24	ततहीर बानो रिजवी	संजीव के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अनुशीलन	2017
25	संजय प्रभाकर	विश्व पर्यटन, व्यापार एवं हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी सिनेमा का योगदान	2017
26	अंशु शुक्ला	माया गोविंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन	2019
27	अच्युतानंद शर्मा	हिन्दी समीक्षा के विकास में प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित का योगदान	2019
28.	सोनी पांडेय।	समकालीन काव्य परिदृश्य और डॉ. श्याम सिंह शशि का काव्य	2020
29.	सुमन कुमार	विद्यापति के काव्य का सांस्कृतिक अनुशीलन	2020
30.	जनकनंदिनी त्रिपाठी	श्री कैलाश चंद्र पंत चिंतन और कृतित्व	2021
31.	वनिता पाण्डेय	डॉ. परशुराम शुक्ल के बाल काव्य का विश्लेषण	2021
32.	ऋतंबरा शुक्ला	केदारनाथ सिंह के काव्य का विश्लेषण	2022
33.	बिनीता मिश्रा	मुंबई की साहित्यिक हिंदी पत्रकारिता और धर्मयुग	2022
34.	□□□□□□ □□□□□□	□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□	2023
35.	□□□□□□ □□□□□□	□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ और □□□□□□	2023

मेरे निर्देशन में एम.फिल. उपाधि प्राप्त विद्यार्थी:

क्र.	नाम	शोध का विषय	वर्ष
1	आशा शेनॉय	निरुपमा सेवती का उपन्यास पतझड़ की आवाज का अनुशीलन	2006
2	नरेंद्रदेव उपाध्याय	कामायनी में प्रकृति – चित्रण	2007
3	शीतल शेट्टे	राम की शक्ति पूजा और रुद्रावतार का तुलनात्मक अनुशीलन	2007
4	नरेश शर्मा	जयशंकर प्रसाद की नारी चेतना का ध्रुवस्वामिनी के संदर्भ में अनुशीलन	2008
5	शारदा पवार	पुनर्नवा: एक अनुशीलन	2008

6	चंद्रा शर्मा	पाँच आँगनों वाला घर: एक अनुशीलन	2008
7	गीता सिंह	कठगुलाब के पात्रों का अनुशीलन	2008
8	अंजनी सिंह	जयशंकर प्रसाद की कामायनी में प्रकृति-चित्रण	2008
9	सुनीता क्षीरसागर	कोई बात नहीं विकलांगता का संदर्भ	2009
10	पूजा गुप्ता	दूरदर्शन की भाषा का विश्लेषणात्मक अध्ययन	2009
11	शैलेश शर्मा	राम नरेश त्रिपाठी की कविताओं का अनुशीलन	2009
12	रत्ना झा	समकालीन कवि विश्वनाथ सचदेव की कविताओं का विश्लेषण	2009
13	शैलेश बहादुर सिंह	दीक्षित दनकौरी की गज़लों की अनुशीलन	2009
14	विद्या कांबले	पहला गिरमिटिया का अनुशीलन	2009
15	धर्मेन्द्र द्विवेदी	बोधिसत्त्व की कविताओं का अनुशीलन	2010
16	वर्षा चव्हाण	एम ज़मीन अपनी का अनुशीलन	2010
17	प्रतिमा शुक्ला	छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना	2010
18	सरिता मिश्रा	आलोक भट्टाचार्य की कविताओं का अनुशीलन	2010
19	श्वेता यादव	हिन्दी नवगीत एवं बुद्धिनाथ मिश्र	2010
20	गीता पाल	चित्रा मुद्गल के एम ज़मीन अपनी के प्रमुख पात्रों का अनुशीलन	2010
21	रमावती यादव	चित्रा मुद्गल की कहानियों का अनुशीलन	2010
22	दिनेश कुमार	रामकथा कल्पलता का अनुशीलन	2011
23	सुनीता गुप्ता	डॉ. चमोला की बाल कविताओं का अनुशीलन	2011
24	प्रांजली चौधरी	'टेम्स की सरगम' एक विश्लेषण	2011
25	नीतू पांडेय	'इन्ही हथियारों से' एक विश्लेषण	2011
26	साधना सिंह	माया गोविंद के गीतों का विश्लेषण	2011
27	रीना संजीव सिंह	समकालीन कवि हुल्लड़ मुरादाबादी की कविताओं का अनुशीलन	2011
28	मनीषा यादव	स्त्री-विमर्श के आलोक में 'मुझे जन्म दो माँ' का अनुशीलन	2012
29	नम्रता उपाध्याय	मैं बोरिशाइल्ला का अनुशीलन	2012
30	नवनीत चड्ढा	शरद जोशी कृत यथा संभव एक विश्लेषण	2012
31	कुंभार विकास	एक ब्रेक के बाद का अनुशीलन	2012
32	सुमन यादव	अभिमन्यु अनंत कृत 'मेरा निर्णय: एक विमर्श'	2012
33	अंकिता	मध्ययुगीन कवि शंकरदेव: लोक चेतना	2013
34	साधना द्विवेदी	ओमा शर्मा की कहानियों का अनुशीलन	2013
35	श्रीमतीसरिता राजेश यादव	पाही घर का अनुशीलन	2013
36	ललिता कुशवाहा	हिंदी संस्मरण के आलोक में घर का जोगी जोगड़ा का विश्लेषण	2014
37	ममता यादव	पाल गोमरा का स्कूटर का उत्तर-आधुनिक विश्लेषण	2015

38	वनिता पाण्डेय	कंपन करती धरती का अनुशीलन	2015
39	सोनी दूबे	माया राग: एक विश्लेषण	2015
40	ममता लालजी यादव	देवदारु समकालीन काव्य परिदृश्य एवं आर.के. पालीवाल	2015
41	संगीता चौहान	फरिश्ते निकल का विश्लेषण	2015
42	वंदना यादव	भारत एक अंतहीन यात्रा का विश्लेषण	2015
43	राजेश्वरी प्रजापति	दूबधान का विश्लेषण	2016
44	कविता मिश्रा	कृति, विकृति, संस्कृति का विश्लेषण	2016
45	प्रियंका सिंह	हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में दस्तावेज का अवदान	2016
46	स्वाति	'चल खुसरो घर अपने' का अनुशीलन	2017
47	संगीता पांडेय	यह पथ बंधु था: एक विश्लेषण	2017
48	भारती प्रमोद कुमार यादव	मुंबई का समकालीन गज़ल परिदृश्य और हस्तीमल हस्ती का 'कुछ और तरह से भी'	2017
49	रीना साहनी	फिर भी कुछ रह जाएगा का विश्लेषण	2017
50	नीलम लालमन यादव	परंपरा का मूल्यांकन में व्यक्त रामविलास शर्मा का चिंतन	2018
51	शशिकला त्रिपाठी	सप्तसिंधु का अनुशीलन	2018
52	विवेक पांडेय	अगस्त काव्य: एक विश्लेषण	2019
53.	सपना सिंह	शत्रुघ्न शौर्य का अनुशीलन	2021

शोधलेख: वर्तमान समय तक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में 380 से अधिक शोधलेख प्रकाशित।

अन्य : अब तक 30 राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन। 250 से अधिक राष्ट्रीय / अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों / कार्यशालाओं में अध्यक्षीय वक्तव्य / अभिपत्र-वाचन / व्याख्यान। दर्जनों बार टी.वी. एवं आकाशवाणी पर परिचर्चा में भागीदारी।

विशेष उपलब्धि: संघ लोकसेवा आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र आयोग के मुख्य परीक्षक / प्राश्निक एवं परीक्षक के रूप में कार्यरत।

अध्यक्ष: स्वयंप्रभा शिक्षण समिति।

महासचिव: प्रभारी विदेश विभाग, हिन्दी साहित्य भारती।

सदस्य :

1. पुरस्कार चयन समिति, साहित्य अकादेमी, भारत सरकार।
2. कमला गोयनका फाउंडेशन की पुरस्कार चयन समिति।
3. पुरस्कार चयन-समिति, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार।
4. आर.आर.सी. मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई।
5. आर.आर.सी. पुणे विश्वविद्यालय, पुणे।
6. आर.डी.सी. विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन।
7. हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय।
8. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अनेक समितियों के सदस्य।
9. परामर्शदाता सर्व भारतीय भाषाई संवर्धन मेला।

10. अनेक विश्व विद्यालयों, महाविद्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको, भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग, भारत पेट्रोलियम, हिंदुस्तानी प्रचार सभा, कर्मचारी आयोग भारत सरकार के चयन और साक्षात्कार समिति।
11. विद्या परिषद आई.आई.एम. विश्वविद्यालय ।
12. आर.आर.सी. मानविकी, उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव (महाराष्ट्र) ।
13. मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी पुरस्कार चयन समिति।
14. मुख्य प्राशनिक (पेपर सेटर) मॉडरेटर एवं मुख्य परीक्षक संघ लोक सेवा आयोग।
15. मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा गठित उच्च स्तरीय चयन समिति।
16. सदस्य विशेषज्ञ समिति केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सरकार।
17. सदस्य संपादक मंडल --अमृत शब्दकोश, भारत सरकार.
18. 18- मध्यप्रदेश शासन द्वारा अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय के लिए नामित विशेषज्ञ।

अंतरराष्ट्रीय / राष्ट्रीय स्तर के जर्नल / पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में प्रकाशित शोध-आलेख:

क्र.	शोध आलेख का शीर्षक	पत्रिका का नाम एवं वर्ष
1	प्रसाद साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप	मधुमती, उदयपुर (फरवरी, 1992)
2	पुनर्नवा के आलोक में चंद्रा	महाराष्ट्र मानस, मुंबई (जून, 1992)
3	कबीर साहित्य में गुरु: पुनर्विचार	भारती, मुंबई (जुलाई, 1991)
4	शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप	भारती, मुंबई (जनवरी, 1992)
5	राहुल के उपन्यासों का अध्ययन	महाराष्ट्र मानस, मुंबई (जुलाई, 1993)
6	कुरुक्षेत्र का काव्य-सौष्ठव	भारती, मुंबई (अक्टूबर 1992)
7	भारतीय नवजागरण का प्रामाणिक व्याख्याता	क्रांतिमन्यु, मेरठ (सितंबर, 1993)
8	भारतवर्ष में सांस्कृतिक एकता	पंचेश्वर, मुंबई (जनवरी 1993)
9	दिनकर का कुरुक्षेत्र	क्रांतिमन्यु, मेरठ (जनवरी 1993)
10	नरेश मेहता: संवेदना एवं शिल्प	महाराष्ट्र मानस, मुंबई (मई 1993)
11	भवानीप्रसाद मिश्र की प्रकृतिपरक कविताएँ	भारती, मुंबई (अक्टूबर, 1993)
12	रामलीला की परंपरा	प्रज्ञान भारती, जयपुर (1994)
13	राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों पर एक विहंगदृष्टि	भारतीय शिक्षण सात्य और तथ्य, (जुलाई-अगस्त, 1994)
14	महावीर प्रसाद द्विवेदी की नारी-दृष्टि	महाराष्ट्र मानस, मुंबई (नवंबर, 1994)
15	साकेत की उर्मिला	पंचेश्वर, मुंबई (फरवरी, 1995)
16	बढ़ते चरण थिरकते पाँव का काव्य-सौष्ठव	क्रांतिमन्यु, मेरठ (मई-जून, 1995)
17	लहरों के राजहंस में प्रतीक योजना	भारती, मुंबई (फरवरी, 1995)
18	कामाचनी में प्रकृति चित्रण का स्वरूप	भारती, मुंबई (अगस्त, 1995)
19	आचार्य द्विवेदी की नारी दृष्टि	बी.आर.डी. त्यागी, दिल्ली द्वारा संपादित पुस्तक 'आचार्य द्विवेदी: साहित्य और पत्रकारिता के सरोकार, में एक अध्याय, इरावदी प्रकाशन, नई दिल्ली – 110002
20	गणेशोत्सव के बदलते सामाजिक आयाम	महाराष्ट्र मानस, मुंबई (सितंबर, 1995)
21	दिनकर की रश्मिरथी	महाराष्ट्र मानस, मुंबई अक्टूबर, 1995)
22	रश्मिरथी का काव्य सौष्ठव	भारती, मुंबई (जनवरी, 1996)

23	बच्चन के काव्य में कविता विषयक चिंतन	संयोग साहित्य, मुंबई (जन-मार्च, 1997)
24	रामलीला और तलुसीदास	भारतीय शिक्षण सत्य और तथ्य, मुंबई (जनवरी 1997)
25	भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में गाँधीवादी चिंतन	हिन्दुस्तानी जबान, मुंबई (जन-मार्च, 1998)
26	कामायनी: परवती प्रभाव संदर्भ	हिन्दुस्तानी जबान, मुंबई (जुलाई-सितंबर, 2000)
27	पुष्टिमार्ग आणि सूरदास	ज्ञानराज, ज्ञानदेव मंडल, ठाणे की मराठी पत्रिका
28	इक्कीसवीं सदी में हिन्दी के समक्ष चुनौतियाँ एवं उनका समाधान	बराबर, हिन्दी परीक्षक (फरवरी 1991)
29	हिन्दी गजल का दूसरा शिखर	संयोग साहित्य, मुंबई (अक्टूबर, 2001)
30	कविता में जीवन और जगत का सार्थक प्रतिबिंबन	क्रांतिमन्यु, मेरठ, (अक्टूबर-दिसंबर, 2001)
31	पुष्टिमार्ग और सूरदास	हिन्दुस्तानी जबान, मुंबई (जनवरी-मार्च, 2002)
32	नेरेश मेहता का काव्य	संयोग साहित्य, मुंबई (अक्टूबर-दिसंबर, 2002)
33	बिंदा करंदीकर की कविता: जन अमरता के जयगान की कविता	दस्तावेज, गोरखपुर, (संस्करण 99) (अप्रैल-जून, 2003)
34	कामायनी के प्रभाव संदर्भ का अनुशीलन	ज्ञानोदय (पुणे में आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित पुस्तक) (जनवरी, 2003) आदित्य पब्लिशर्स, बीना (उ.प्र.) आई.एस.बी.एन. 81-87725-22-2
35	कामायनी एक अध्ययन	हिन्दी साहित्य का वर्तमान परिप्रेक्ष्य: डॉ. एच.एल. शर्मा द्वारा संपादित (2002) नारायण प्रकाशन, वाराणसी, पिन – 373406
36	समसामयिक हिन्दी कविता के सामाजिक सरोकार	हिन्दुस्तानी जबान, मुंबई (जुलाई-सितंबर 2003)
37	बदलते परिप्रेक्ष्य में हिन्दी	महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी का द्विशताब्दी समारोह का विशेषांक, 2003-04
38	जनअमरता के जयगान के गायक बिंदा करंदीकर	बराबर, मुंबई, जुलाई, 2003
39	बदलते परिवेश में हिन्दी	राष्ट्रभाषा, वर्धा (नवंबर, 2004)
40	वैश्वीकरण का प्रभाव	उपलब्धि, औरंगाबाद (दिसंबर, 2004)
41	प्रेमचंद का औपन्यासिक शिल्प	प्रेमचंद का रचना संसार (पुनर्मूल्यांकन), (दिसंबर, 2004) आई.एस.बी.एन. 81-902-4390-0
42	एक व्यक्ति की बहुरंगी छवियाँ	पुस्तक वार्ता, मार्च-अप्रैल, 2005 संस्करण संख्या 16 18-21
43	इतिहास दर्शन और हिन्दी साहित्य का इतिहास	बहुवचन अप्रैल-जून, 2005, संस्करण संख्या 17 33-35
44	समसामयिक यथार्थ को प्रतिबिंबित करती कविताएँ	पुस्तक वार्ता, मई-जून, 2005 संस्करण संख्या 17 33 – 35

45	वैश्वीकरण का भाषा साहित्य और समाज पर प्रभाव	राष्ट्रभाषा, वर्धा (अप्रैल, 2005)
46	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : सामाजिक परिदृश्य	हिन्दुस्तानी जबान, मुंबई (जुलाई-सितंबर, 2005)
47	दलित विमर्श और प्रेमचंद के उपन्यास शीर्षक से एक अध्याय	प्रेमचंद साहित्य और संवेदना डॉ. पी.वी. विजयन द्वारा संपादित (2005)
48	'रुद्रावतार: अद्भुत भाषा सामर्थ्य की विलक्षण कविता' शीर्षक से एक अध्याय	'रुद्रावतार विमर्श' डॉ. नित्यानंद तिवारी द्वारा संपादित (2006), नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, आई.एस.बी.एन. 81-214-0172-0
49	संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी	राष्ट्रभाषा, वर्धा (2006)
50	दलित विमर्श के आलोक में प्रेमचंद के उपन्यास	अक्षरा (सितंबर-अक्टूबर, 2006)
51	हिन्दी कहानी के सौ वर्ष	संयोग साहित्य, मुंबई (जुलाई-दिसंबर 2006)
52	संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी : कब और कैसे	प्रगतिशील आकल्प, मुंबई (जुलाई-2007)
53	विश्वनाथ सचदेव की कविता	दस्तावेज, गोरखपुर (अक्टूबर, 2007)
54	नयी भावभूमि के स्रष्टा बच्चन एवं उनके गीत	संवाद ओर हस्तक्षेप, भोपाल (2007) संपादन: डॉ. सुनिता खत्री
55	महाप्राण निराला	विश्वा, न्यूयॉर्क, अमेरिका (अक्टूबर- दिसंबर 2007) 08540 20-24
56	पुस्तक समीक्षा	विश्वा, न्यूयॉर्क, अमेरिका (अक्टूबर- दिसंबर 2007) 08540 55
57	सामाजिक प्रतिबद्धता का लोकवृत्त	अक्षरा, भोपाल (जनवरी-फरवरी, 2008)
58	परंपरा और आधुनिकता के कवि अरुण कोलटकर	दस्तावेज, गोरखपुर (जनवरी-मार्च 2008)
59	अमेरिका में हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप और विकास	लोकगंगा, देहरादूर (अप्रैल, 2008)
60	उत्तर आधुनिक दौर में स्त्री-विमर्श	सृजन समीक्षा, उरई (जनवरी-जून, 2008)
61	संशयातुमा के खतरे से आगाह कराती कविताएँ	शब्दसृष्टि, मुंबई (जनवरी-जून, 2008)
62	धूमिल अर्थात् कविता में लोकतंत्र	कुतुबनुमा, मुंबई (मार्च-मई, 2008)
63	बच्चन का काव्य चिंतन	शब्दसृष्टि, मुंबई (जून-दिसंबर, 2008)
64	उत्तर-आधुनिकता का स्वरूप	अक्षरा, भोपाल (मार्च-अप्रैल, 2009)
65	अदम्य जिजीविषा तथा कालजयता का अहसास कराती कविताएँ	परिचय, वाराणसी (दिसंबर, 2008)
66	1857 का सच	मंगलदीप, अप्रैल 2009
67	21वीं सदी में हिन्दी के समक्ष चुनौतियाँ एवं समाधान	केरल ज्योति, (दिसंबर, 2009)
68	स्त्री-विमर्श और प्रसाद काव्य के शिखर नारी-चरित्र, भाग-1	अक्षरा, भोपाल (नवंबर-दिसंबर, 2009)
69	स्त्री-विमर्श और प्रसाद काव्य के शिखर नारी-चरित्र, भाग-2	अक्षरा, भोपाल (जनवरी-फरवरी, 2010)
70	स्त्री-विमर्श और प्रसाद काव्य के शिखर नारी-चरित्र, भाग-3	अक्षरा, भोपाल (मार्च-अप्रैल, 2010)

71	हिन्दी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य	विवेक, मुंबई (सितंबर 2010)
72	भारतीयरेल और हिन्दी पुस्तक की भूमिका	डॉ. लालजी यादव, भास्कर पब्लिकेशन, कानपुर
73	बौद्धिक संवेदना के कवि अज्ञेय	उत्तरप्रदेश, लखनऊ अक्टूबर-नवंबर, 2010
74	मनीषी परंपरा के साहित्यिक	डॉ. कैलाश चंद्र पंत, अभिनंदन ग्रंथ भोपाल
75	नागार्जुन का काव्य-चिंतन (भाग 1)	लोक शिक्षक, जयपुर (अप्रैल, 2011) प्रथम भाग
76	नागार्जुन का काव्य-चिंतन (भाग 2)	लोक शिक्षक, जयपुर (मई, 2011) द्वितीय भाग
77	नागार्जुन का काव्य-चिंतन	उत्तर प्रदेश, लखनऊ (मार्च-मई, 2011)
78	सामाजिक चिंता तथा संवेदनात्मक औदात्य के कवि डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	साहित्य का स्वाधीन विवेक, संपा, ओम निश्चल, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली (2011)
79	आधुनिक संवेदनाके कवि अज्ञेय	आलोचना, सहस्राब्दी अंक-41 (अप्रैल-जून, 2011) नई दिल्ली
80	हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यास	मराठी पुस्तक 1980 नंतरचे स्त्री-निर्मित कथन पर साहित्य, संपा. डॉ. पुष्पलता राजापुरे तापस, शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपूर
81	परंपरा के प्रगति पथ का आधुनिक कबीर: नागार्जुन	संवाद और हस्तक्षेप, भोपाल, मध्य प्रदेश, राष्ट्रभाषा प्रचार समितिद्वारा प्रकाशित ग्रंथ, 2011
82	शलाका पुरुष महावीर प्रसाद द्विवेदी	युग प्रवर्तक द्विवेदी जी, संपा. दिनेश बैसवारी प्रकाशक, अनुपम साहित्य संगम गोरेगांव (पूर्व) मुंबई – 400063
83	हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य	हिन्दी राष्ट्र की अस्मिता-ग्रंथ, संपा. प्रो. रमेश दवे, प्रकाशक: माधवराव सप्रे संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल – 462003
84	हिन्दी भाषा: उद्भव और उद्यतन विकास	राष्ट्रभाषा, वर्धा (अक्टूबर, 2011)
85	संवेदनात्मक कवि: डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	अक्षरा, भोपाल, (नवंबर-दिसंबर, 2011)
86	नागार्जुन के काव्यादर्श	आलोचना, सहस्राब्दी अंक – 43, (अक्टूबर-दिसंबर, 2011)
87	कामायनी: एक उत्तर-आधुनिक विमर्श	लोक शिक्षक, जयपुर (नवंबर, 2011) प्रथम भाग लोक शिक्षक, जयपुर (दिसंबर, 2011) द्वितीय भाग लोक शिक्षक, जयपुर (जनवरी, 2012) तृतीय भाग लोक शिक्षक, जयपुर (नवंबर, 2012) चतुर्थ भाग

88	निराला का महाप्राण व्यक्तित्व	अतुल्य निराला, संपा. दिनेश बैसवारी, प्रकाशक: अनुपम साहित्य संगम, गोरगांव (पूर्व), मुंबई 400060
89	हिन्दी भाषा: उत्पत्ति और विकास	शब्दसृष्टि अक्टूबर-दिसंबर, 2011, पृष्ठ: 56-63
90	मनोवैज्ञानिक और मिथकीय आलोचना	सैद्धांतिक और सर्जनात्मक आलोचक डॉ. शीतांशु साहित्य विवेक का प्रादर्श, भारत पुस्तक भण्डार, फेस ई, 1/265 ए, गली नं. 16, सोनिया विहार, दिल्ली – 110014
91	विसंरचनावाद का वैज्ञानिक विवेचन	उपर्युक्त ग्रंथ, पृष्ठ 311-344
92	हिन्दी भाषा का अद्यतन विकास	हिन्दी दिवस विशेषांक, नवभारत, मुंबई – 2
93	हिन्दी का वैश्विक पटल	हिन्दी अनुशीलन, इलाहाबाद, जनवरी-दिसंबर, 2012, पृष्ठ 52-64, आई.एस.एस.एन.2249-930
94	आधुनिक संवेदना के कवि अज्ञेय	चिंतन दिशा, मुंबई, अक्टूबर-दिसंबर, 2011, पृष्ठ 8-14
95	संवेदनात्मक औदात्य के कवि	अभिनव हमरोज, नयी दिल्ली, दिसंबर 2015, पृष्ठ: 78-83 आई.एस.एस.एन. 2321-1105
96	विश्वभाषा के रूप में हिन्दी का वर्तमान स्वरूप	हिन्दी का वैश्विक संदर्भ, 2015 ज्ञानप्रकाशन, कानपुर आई.एस.एस.एन. 978-93-80669-60-1
97	हिन्दी आलोचना का लोकतांत्रिक स्वरूप	हिन्दुस्तानी जबान, जनवरी-मार्च 2015, पृष्ठ 11-16
98	संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी	राजभाषा भारती, गृहमंत्रालय, भारत सरकार, जनवरी-मार्च, 2016, पृष्ठ 18-24
99	नवजागरण सदा अनिवार्य है	अनुशीलन, जनवरी 2016 कोच्चि – 6820022 आई.एस.एस.एन. 2249-2844
100	गांवों में सुरक्षित है भारतीयता	हिन्दी विवेक, मुंबई नवंबर, 2016, पृष्ठ: 255-257
101	हिन्दी पर मंडराता भीषण संकट	हिन्दी विवेक, मुंबई, अप्रैल, 2016, पृष्ठ: 56-57
102	वर्तमान परिदृश्य में संत वील्होजी के काव्य की प्रासंगिकता	अमर ज्योति, हिसार (हरियाणा), अप्रैल 2016, पृष्ठ : 21-22 आई.एस.एस.एन. 227-7660
103	मनोवैज्ञानिक और मिथकीय आलोचना	चेतना, सुल्तानपुर (उ.प्र.) सितंबर 2016, पृष्ठ: 128-136 आई.एस.एस.एन. 2554-1575
104	भारत की अतुल्य सामाजिक दृष्टि और	अतुल्य भारत प्र.सं. 2017

	हिन्दू त्व	प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली -110002 आई.एस.बी.एन. 978-93-86300-52-2
105	भारतीय योग परंपरा और कबीर	अभ्युदय वात्सल्यम, मुंबई जून-2017, पृष्ठ: 53-54
106	हिन्दी आलोचना की 21वीं सदी	हिन्दी अनुशीलन, इलाहाबाद, जनवरी-जून 2017, पृष्ठ: 17-22 आई.एस.एस.एन. 2249-930
107	हिन्दी के टूटने से देश की भाषिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी	द वायर (हिन्दी), ई-जर्नल, संपा. विनोद दुआ दिनांक 27/07/2017
108	मोदीराज में हिन्दी के अच्छे दिन	हिन्दी विवेक, मुंबई, सितंबर 2017 पृष्ठ: 18-20
109	हिन्दी का वैश्विक प्रशिक्षण: चुनौतियाँ और समाधान	नवपल्लव, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) पृष्ठ: 17-19, आई.एस.एस.एन. 471-099 सितंबर – अक्टूबर 2017
110	साहित्यालोचन को चंद्रकांत बांदिवडेकर का प्रदेय	शब्दसृष्टि 2017-2018, पृष्ठ. सं. 83-85
111	वैश्वीकरण के दौर में संत नामदेव के काव्य की प्रासंगिकता	साक्षात्कार, भोपाल, नवंबर 2017, पृष्ठ: 68-71 आई.एस.एस.एन. 2456-1924
112	त्रिलोचन का गद्य साहित्य	साक्षात्कार, भोपाल, जनवरी 2018, पृष्ठ: 55-58 आई.एस.एस.एन. 2456-1924
113	डॉ. नगेन्द्र का आलोचना कर्म	अक्षरा, भोपाल, फरवरी 2018, पृष्ठ: 21-26
114	सामाजिक चिंता के कवि	अभिनव इमरोज, सभ्या प्रकाशन, नई दिल्ली- 110 070 व्यक्तिविशेष दस्तावेज, पृष्ठ: 272-280, आई.एस.बी.एन. 978-93-83785-42-1
115	त्रिलोचन का गद्य लेखन	रेल सुरभि, मुंबई, अप्रैल-सितंबर 2017, पृष्ठ: 12-14
116	नारी सशक्तिकरण: बरास्ते परंपरा का पुर्नपाठ	अभिनव इमरोज, नई दिल्ली, मई-2018, पृष्ठ 9-13 आई.एस.एस.एन. 2321-1105
117	हिंदी का बढ़ता वैश्विक दायरा	हिंदुस्तानी भाषा भारती, अक्टूबर -दिसंबर 2017, पृष्ठ - 22-23
118	हिन्दी का वैश्विक प्रशिक्षण: चुनौतियाँ और समाधान	प्रवसी जगत, जनवरी-मार्च 2018, पृष्ठ 88-91
119	गद्यकार त्रिलोचन	चिंतन दिशा, जनवरी-जून 2018, पृष्ठ 41-45
120	हिन्दी का वैश्विक प्रशिक्षण कैसे?	अक्षर वार्ता, अक्टूबर 2017, आई.एस.एस.एन. 2349-7521

		(यु.जी.सी. लिस्ट नंबर 47083 उज्जैन मध्य प्रदेश)
121	योग परंपरा और कबीर	अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका सहचर, फरवरी 2018, आई.एस.एस.एन. 2395-2893
122	प्रसाद परंपरा के कवि आलोचक मुक्तिबोध	अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका सहचर, अप्रैल 2018, आई.एस.एस.एन. 2395-2983
123	विश्व में हिन्दी का स्थान	अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका साहित्य संवाद, अप्रैल 2018, आई.एस.एस.एन. 2347-8796
124	हिन्दी भाषी चाहे सबका विकास	हिन्दी विवेक, अगस्त 2018, पृष्ठ: 32-33, मुंबई
125	हिन्दी आलोचना की 21वीं सदी आलोचना महाविशेषांक, भाग-1	साहित्य विमर्श, पृष्ठ: 1-8, जनवरी-जून, 2018, पूर्वोत्तर साहित्य विमर्श संस्थान, असम – 786171
126	वैश्विक हिन्दी का स्वरूप	साहित्य भारती, अप्रैल-जून 2018, पृष्ठ: 1 – 7 आई.एस.एस.एन. 2455-1309
127	संस्कृति की प्रासंगिकता	गगनांचल, मार्च-अगस्त, 2018 पृष्ठ: 9-14, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली 110 001 आई.एस.एस.एन. 0971-1430
128	हिन्दी की बढ़ती भूमिका	साक्षात्कार, अगस्त 2018, पृष्ठ: 54-58 म.प्र. साहित्य अकादमी, भोपाल – 462023 आई.एस.एस.एन. 2456-1924
129	विश्व को जोड़नेवाली संस्कृति और हिन्दी	विश्व हिन्दी सम्मेलन स्मारिका, मारीशस, आई.एस.एस.एन. 18-20, 2018, पृष्ठ: 264-267 विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
130	प्रसाद परंपरा के आलोचक मुक्तिबोध	मधुमती, उदयपुर, सितंबर-2018, आई.एस.एस.एन. 2321-5569
131	हिन्दी आलोचना की 21वीं सदी	21वीं सदी के साहित्य की वैचारिकी संपा. डॉ. के. शीतला विष्णु अमन प्रकाशन, 104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर 208012 (उ.प्र.) आई.एस.बी.एन. 978-9388260-00-8
132	डॉ नगेन्द्र का आलोचना-कर्म	अक्षरा, फरवरी- 2018 मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, भोपाल, आई.एस.एस.एन- 2456-7167
133.	मॉरीशस में हिन्दी	प्रवासी जगत,

		केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार आगरा- 282005 आई.एस.एस.एन- 2581-6985
134.	डॉ चंद्रकांत बांदिवडेकर: एक समग्रतावादी आलोचक	समन्वय पश्चिम, जुलाई-दिसंबर 2018 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, अहमदाबाद मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, आई.एस.एस.एन:
135.	मॉरीशस और हिन्दी	भाषा, जुलाई-अगस्त 2018 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सरकार नई दिल्ली- 110066 आई.एस.एस.एन-0523-1418
136.	आचार्य शुक्ल और आचार्य द्विवेदी का आलोचनात्मक द्वंद	सामयिक सरस्वती, जनवरी-मार्च 2019 सामयिक प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली- 110002 आई.एस.एस.एन- 2454-2911
137.	राजनीतिक समय में सृजन की चुनौतियाँ	पुस्तक भारती, बर्ष-1, अंक-3, अंतरराष्ट्रीय द्विभाषिक शोधपत्रिका पुस्तक भारती संस्थान, टोरंटो, कनाडा, जुलाई-सितम्बर-2019 आई.एस.एस.एन- 2562-6086
138.	किन्नर जीवन का दुःख दग्ध संसार	हिन्दुस्तानी ज़बान, पृष्ठ- 92-94 अप्रैल-जून 2019, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा मुंबई- 400004 आई.एस.एस.एन-0378-3928
139.	हिंदी को बोलियों से मत लड़ाइए	हिन्दुस्तानी भाषा भारती, पृष्ठ 33-36 अक्टूबर-दिसंबर 2019 हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी नई दिल्ली- 110034 आई.एस.एस.एन- 0177-3904
140.	राजनीतिक समय में सृजन की चुनौतियाँ	पुस्तक भारती, अंक-3, जुलाई-सितंबर 2019, अंतरराष्ट्रीय द्विभाषिक शोध पत्रिका पुस्तक भारती संस्थान, टोरंटो, कनाडा आई.एस.एस.एन- 2562-6086
141.	छायावाद: पुनर्पाठ के नए प्रतिमान	सामयिक सरस्वती, पृष्ठ- 64-74 सामयिक प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली- 110002 आई.एस.एस.एन- 2454-2911
142.	हिन्दी का बढ़ता वैश्विक दायरा	हिंदी: विमर्श के विविध आयाम, प्रथम संस्करण 2020, पृष्ठ-10-13 हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी दिल्ली-110034 आई.एस.बी.एन.- 978-81-946521-1-3
143.	हिंदी के वैश्विक राजदूत	कर्मयोद्धा, पृष्ठ-189-193 प्रथम संस्करण 2020 हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था मुंबई- 400066

144.	आचार्य रामचंद्र शुक्ल के कबीर संबंधी मूल्यांकन का पुनर्पाठ	अक्षरा, मई-जून 2020, पृष्ठ सं- 25-30 म.प्र.राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिंदी भवन भोपाल-46200 आई.एस.एस.एन.- 2456-7167
145.	विश्व भाषा हिंदी की अद्यतन स्थिति	हिन्दुस्तानी भाषा भारती, अप्रैल-जून 2020 पृष्ठ-12-24
146.	हिंदी आलोचना की वर्तमान सदी	ओरहन, 2020 पृष्ठ- 71-78 नॉटमल प्रकाशन, दिल्ली आई.एस.बी.एन. – 978-93-8960-62-6
147.	अयोध्या कल, आज और कल	नवभारत टाइम्स. कॉम, 6 अगस्त 2020, मुंबई.
148.	आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना और हिंदी	प्रवासी संदेश डिजिटल, 14 सितम्बर 2020 www.pravasisandesha.news
149.	भाषाओं का भविष्य	नवनीत, हिंदी प्राइवेट, सितम्बर 2020 पृष्ठ सं.- 23-28 भारतीय विद्या भवन, मुंबई
150.	शिक्षा का भविष्य और भविष्य की शिक्षा	हिंदी विवेक, सितंबर 2020 पृष्ठ सं.- 23-26 हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था, मुंबई-400066
151.	छायावाद : पुनर्पाठ के अभिनव प्रतिमान	अनुसंधान शोध पत्रिका इलाहाबाद विश्वविद्यालय, जुलाई-दिसंबर 2019, पृष्ठ सं. – 01-17 इलाहाबाद, आई.एस.एस.एन.- 5249-9318 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका क्र. 41389
152.	विश्व में हिंदी का स्थान	प्रवासी जगत, अक्टूबर – दिसंबर 2019 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका आई.एस.एस.एन -2581 -6985 पृष्ठ सं.-111-119
153.	विश्व में हिंदी की स्थिति	भारती 2018 -2019 पृष्ठ सं- 8-12 स्वर्ण जयंती विशेषांक, अकबरपुर , आम्बेडकर नगर , उ. प्र.
154.	शताब्दी पुरुष चन्द्रकुमार वतर्वाल	हिंदी विवेक, नवम्बर – 2019 हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था , मुंबई – 400066 पृष्ठ सं . 80 – 88
155.	रामचंद्र शुक्ल के कबीर संबंधी मूल्यांकन का पुनर्पाठ	अक्षरा दिसंबर 2020 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका आई.एस.एस.एन - 2456-7167

		पृष्ठ स.- 25-30
156.	प्रसाद के रंगसृष्टि का प्रकर्ष 'ध्रुवस्वामिनी'	अक्षरा दिसंबर 2020 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका आई.एस.एस.एन - 2456-7167 पृष्ठ स.-34-38
157.	काश! शिक्षा का माध्यम बन पाती	नवनीत, सितम्बर -2020 पृष्ठ सं. 23- 28 भारतीय विद्याभवन – 400006
158.	शिक्षा का भविष्य और भविष्य की शिक्षा	हिंदी विवेक, सितम्बर – 2020 हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था, मुंबई – 400066 पृष्ठ सं.- 24-25
159. 160-	हिंदी के वैश्विक राजदूत हिंदी के साहसी और जुझारू योद्धा	हिंदी विवेक, जनवरी – 2020, पृष्ठ-189-192 हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था, मुंबई – 400066 वही- पृष्ठ--229-235
161.	नवजागरण कालीन आलोचना और आचार्य रामचंद्र शुक्ल	आधुनिक साहित्य vol.37, जनवरी –मार्च 2021 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका आई.एस.एस.एन - 2277 – 7083 पृष्ठ स.- 15-23
162.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय भाषाएँ	भाषा मार्च – अप्रैल 2021 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका आई.एस.एस.एन - 0523 – 1418 पृष्ठ स.-9-15
163.	प्रसाद की कहानियाँ : शिल्प का ताजमहल	गवेषणा जनवरी –मार्च 2021 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका आई.एस.एस.एन - 0435-1460 पृष्ठ स.-31-39
164.	पाश्चात्य काव्यशास्त्र का प्रमाणिक व्याख्याता	जनकृति फरवरी – मार्च 2021 आई.एस.एस.एन -2454 – 2725 पृष्ठ स.- 210 – 216
165.	प्रसाद का आरंभिक काव्य : विराट संभावना का उन्मेष	जनकृति अप्रैल –मई 2021 आई.एस.एस.एन -2454 – 2725 पृष्ठ स.-247-251
166.	मराठी रामकाव्य का स्वरूप विकास	अक्षरा अप्रैल 2021 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका क्र - 2456-7167 पृष्ठ स.- 20-24
167.	विराट सृजन का मंगलाचरण	समकालीन भारतीय साहित्य जुलाई –अगस्त 2021

		यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका आई.एस.एस.एन- HIN/1980/1009 पृष्ठ सं.-142-146
168.	अयोध्या का अतीत, वर्तमान और भविष्य	हिंदी विवेक, जून – 2021 हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था, मुंबई – 400066 पृष्ठ सं.- `258-264
169.	आत्मनिर्भर शिक्षा , राममंदिर से राष्ट्रमंदिर ,	हिंदी विवेक, जून – 2021 हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था, मुंबई – 400066 पृष्ठ सं.- 161-168
170.	मराठी रामकाव्य	उर्वशी,रामायण विशेषांक अगस्त 2021,पृष्ठ सं.-52-57, आई.एस.एस.एन.2454-7530
171.	हिंदी की पहली कहानी	नवनीत, जून -2021 पृष्ठ सं. 30- 33 भारतीय विद्याभवन – 400006
172.	‘कामना : प्रतीकात्मक संभावनाओं का संधान’	अक्षरा जुलाई 2021 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका क्र - 2456-7167 पृष्ठ सं.-15-20
173.	नाथ संप्रदाय और योगी आदित्यनाथ	हिंदी विवेक, अगस्त – 2021 हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था, मुंबई – 400066
174.	स्वाधीन भारत का जटिल सुरक्षा परिदृश्य	गगनांचल , नवम्बर- 2021 आई.एस.एस.एन- 097-1430,2022, पृष्ठ सं. 117-120 भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद आजाद भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट नई दिल्ली- 1100 02
175.	हिंदी कहानी का आकाशदीप	साक्षात्कार , मई – जून – जुलाई - 2021 पृष्ठ संख्या – 76- 83 आई. एस.एस.एन. न. 2456-19 24, साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश, भोपाल
176.	पुरोवाक	हिमालय के आँचल में प्रकृति का स्पर्श ,पृष्ठ- 15- 24 प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली -11000 2 आई.एस. बी.एन. – 97893990923472
177.	गहन □□□□□□ □□□ और □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□	राकेश मिश्र की कवितार्यै हंस प्रकाशन, नई दिल्ली – 1100 94 संपादक – डॉ. रमा आई.एस.बी.एन. नं- 978-81-950535-5-1 पृष्ठ सं – 95 – 99
178.	हिंदी आलोचना और आचार्य रामचंद्र	पुस्तक भारती, रिसर्च जर्नल

	शुक्ल	जन-मार्च -2022 पृष्ठ सं. – 28 – 35 टोरंटो, कनाडा
179.	संवेदनात्मक औदात्य के कवि अज्ञेय	अक्षरा मार्च-2022 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका आई.एस.एस.एन - 2456-7167 पृष्ठ सं.-75-78
180 .	भारतीय ज्ञान परंपरा की महाकविता 'अथर्वा'	अक्षरा मई-2022 यूजी.सी.स्वीकृत पत्रिका आई.एस.एस.एन - 2456-7167 पृष्ठ सं.-95 -99
181.	संघर्ष के परिवेश में भारत का जटिल सुरक्षा परिदृश्य	संघर्ष और शक्ति , त्रयंबक प्रकाशन, कानपुर. आई. एस. बी.एन. – 978-81-950535-5-1 पृष्ठ सं.-45-51
182.	चीनी घुसपैठ और उसका पीछे हटना	हिंदी विवेक, जुलाई – 2022 हिन्दुस्थान प्रकाशन संस्था, मुंबई – 400066
183.	भक्ति-चेतना और हिंदी साहित्य	दीक्षितायन, जुलाई -2022 शब्दसृष्टि पृष्ठ सं.- 281-283 आई.एस. बी.एन. न- 978-81-922681-0-1
184.	कहानीकार निशंक	डॉ. निशंक की रचनाशीलता के विविध आयाम, 2022, पृष्ठ सं. 15-23 अनंग प्रकाशन , नई दिल्ली , आई. एस. बी. एन. – 978-93-80845-51-7
185.	जयशंकर प्रसाद की प्रामाणिक मीमांसा	अक्षरा,अगस्त-2022,यू.जी.सी. स्वीकृत पत्रिका. आई.एस.एस.एन. 2456-7167 पृष्ठ संख्या – 44-50
186.	□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□	□□□□□□, □□□□□□ 2022, □□□□□□- 14-19
187.	□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□	□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□ 2022,□□□□□□-23-25।
188.	□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□	□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ 2022,□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□, आई.एस.एस.एन : 2583- 5750,□□□□□□□□□□.
189.	□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ :एक □□□□□□□□	□□□□□□□□, □□□□□□□□ 2022, □□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□□ 22- 26,आई.एस.एस.एन .- 2456- 7176,□□□□□□.
190.	□□□□□□□□	सब □□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□□□□□,

		नई , 7-16. 2022।आई.एस.एन . 9355188927.
191.		, , , - 2022,--197- 202, , , आई.एस.एस.एन .-0435- 1460. , , ,
192.	और 	, - 2022, 25- 34, , आई.एस.एस.एन .-0523- 1418, ,
193.	भयउ 	, 2023, --74-81 , , आई.एस.एन -979-93-55009-55-5।
194.		, , 2023, - 43-49, , , आई.एस.एस.एन .2456--7167,
195.	और 	– , - 2023, 28-32,12 , , , , ,
196.		, - 2023, - 44- 53, , - 110007
197.		- .- और -- 2019, -9-13 , नई -110053, आई.एस.एन . 978- 81- 940315-7-4
198.		, , - . ,2020, -125- 130, ,

		,आई.एस .००.एन .978-93-81022-89-4
199.	□□□□□□□ :एक □□□□□□□□	□□□□□□□ एक □□□□□□□□□□,□□□□□□-□□□□. □□□□□□ □□□□□□□□ 2021, □□□□□-42-60,□□□□□ □□□□□□ □□□□□, नई □□□□□□- 110001,आई.एस .००.एन -978-93- 90872-74-9
200.	□□□□□□□ □□□□□ और □□□□□□ □□□□□□	□□□□□□ □□□□□□ □□□□ और □□□□□□, □□□□□□-- 2437,□□□□□□□- □□□.□□□□ □□□□□□□, □□□□□.□□□□□□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□, नई □□□□□□-110053,आई.एस .००.एन 978-81-951633-5-9.
201	□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□	□□□□□□□□□□□□,□□□□□□□- □□□□□.□□□□□□□ □□□□□□□,2023,□□□□□□-333-335, □□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□□□□,आई.एस .००.एन 978-93- 82662-57-0
202	□□□□□□□	□□□□ □□ □□□□□ □□□□ : □□□□□□□□ और □□□□□□□□, 1-3, □□□□□□□ □□□□.□□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□, आई.एस .००.एन 978-1-989416-76-1.
203	□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□	□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ और □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□, □□□□□□ 1-17,- □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ और □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ 2023 ,आई.एस .००.एन 978-9358-2507-01.
204	□□□□□□□□□□ □□□□□	□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ ई - □□□□□□- □□□□□□□□- □□□□.□□□□□□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□□-628- 632,□□□□□□□-मई -2023, आई.एस .एस .एन 2454-2725.
205	□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□	□□□□□□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□□□-□□□□.□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□□□- 6- 10,□□□□□□□□□□-□□□□□□□ 2023,आई.एस .एस .एन 2455-2739.
206	□□□□□□□□□□ □□□□□□	□□□□ □□□□□□, □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□, 2022,□□□□-36,38-41, आई.एस .एस .एन . 2348-2397.
207	□□□□□□□□ □□□□□□□ और	□□□□□□□□□□, 2023,□□□□-1, □□□□□□

	□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□	17-20, आई.एस.एस.एन . 2454-907.
208	□□□□□□□□□□ □□ □□□	अक्षरा, अप्रैल 2024, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत पत्रिका, आई.एस.एस.एन. 2456-7167
209	□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ वन □□□□□□	रचना, संयुक्तांक नवम्बर 2023 से फरवरी 2024, आई.एस.एस.एन. 2249-5269

अंतरराष्ट्रीय / राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन एवं सहयोग:

- वर्तमान साहित्य में दलित और स्त्री -विमर्श पर दिनांक 4 एवं 5 मार्च, 2004 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सहयोग।
उद्घाटक – श्रीयुत गोविंद मिश्र, अध्यक्ष डॉ. भाचंद्र मुणगेकर, आमंत्रित अतिथि – डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर (पुणे), डॉ. मोइनुद्दीन जिनावडे, डॉ. चंद्रदेव कवडे, डॉ. माधव सोनटक्के, डॉ. अंबादास देशमुख (औरंगाबाद), डॉ. सुरेश झाडे (पुणे), जितेंद्र भाटिया, डॉ. माधुरी छेड़ा, डॉ. हरिवंश पांडेय, डॉ. राजमनटराजन पिल्लै, डॉ. मंजुला देसाई, डॉ. उषा राणावत, डॉ. मुक्ता नायडु, डॉ. सतीश पांडेय, डॉ. सादिका नवाब, डॉ. शशिकला राय (सभी मुंबई)
- विभागीय छात्रों के परिसंवाद का 5 सितंबर 2004 को फोट परिसर में आयोजन प्रमुख अतिथि- डॉ. वासंतीबेन वैद्य, अध्यक्ष डॉ. माधव पंडित, प्रमुख वक्ता – मीडियाकर्मी – संजय सिंह। छात्रों की ओर से वंदना झा, प्रीति उपाध्याय, विकेश सिंह, शीला गायकवाड, मनीषा माथुर तथा आशा दूबे के अभिपत्र।
- ‘हरिवंशराय बच्चन विविध आयाम’ विषय पर 2 एवं 3 फरवरी 2005 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सहयोग।
आमंत्रित अतिथि- डॉ. तेज सिंह (दिल्ली), डॉ. पांडुरंग पाटिल (कोल्हापुर), डॉ. गणेश सोनाले (औरंगाबाद), डॉ. ए. अच्युत (कालीकट), डॉ. शोभा देशपांडे, प्रा. मनोहर, डॉ. विजया, डॉ. उषा प्रदीप, डॉ.
- ‘समकालीन हिन्दी उपन्यास’ विषय पर दिनांक 16 फरवरी 2005 को एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सहयोग।
प्रमुख अतिथि: डॉ. इंदुप्रकाश पांडेय (जर्मनी), डॉ. हाइडी पांडेय (जर्मनी), डॉ. माधव पंडित, डॉ. सुर्यबाला, डॉ. नटराजन, डॉ. मुक्ता नायडु, डॉ. संतोष मोटवाणी, डॉ. अनिल सिंह, डॉ. मीणा भंडारी।
- ‘इलेक्ट्रॉनिक मीडिया: विविध आयाम’ विषय पर दिनांक 5 एवं 6 जनवरी, 2007 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सहयोग।
उद्घाटक: प्रो. जी. गोपीनाथन, श्री. राजनारायण बिसारिया, डॉ. ए.टी. सावंत, डॉ. शंकर बुंधेले, डॉ. रामजी तिवारी, सरिता सिंह, रवि तिवारी इत्यादि।
- ‘जनसंचार माध्यम और हिन्दी’ विषय पर दिनांक 8 एवं 9 मार्च 2007 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सहयोग।
उद्घाटक: डॉ. राजेन्द्र यादव, डॉ. विजय खोले (कुलगुरु, मुंबई विश्वविद्यालय, डॉ. शैलेन्द्र शर्मा इत्यादि।
- दिनांक 28 जुलाई 2007 को पं. किरण मिश्र की पुस्तक ‘कंपन करती धरती’ का विमोचन एवं कवि सम्मेलन का संयोजन।
मुख्य अतिथि: न्यायमूर्ति श्री. डी.आर.धानुका, डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, प्रो. नंदलाल पाठक, श्री. एस.एस. संगई, श्री. आलोक भट्टाचार्य, श्री. हुल्लड मुरादाबादी, श्री. सुशील कृष्ण गोरे, श्री. कैलाश सेंगर इत्यादि।

8. दिनांक 27 जनवरी, 2008 को 'हिन्दी-मराठी दो दिवसीय त्रैमासिक प्रतिका तथा डॉ. विजया द्वारा लिखित हिन्दी आत्मकथा साहित्य का अनुशीलन' पुस्तक के लोकार्पण समारोह का संयोजन।
प्रमुख अतिथि: प्रो. प्रमोद तलगेरी, अध्यक्ष: अनुराग त्रिपाठी, सत्कारमूर्ति – डॉ.नी.र. वन्हडपांडे वक्ता – डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर (पुणे), डॉ. राहुल (दिल्ली), डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. सूर्यबाला (मुंबई), डॉ. रमेश वरखेडे (नाशिक), डॉ. नीरा नाहाटा, डॉ. सतीश पाण्डेय, डॉ. मुक्ता नायडु (मुंबई) इत्यादि।
9. राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में दिनांक 17 वे 18 मार्च को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सहयोग।
उद्घाटक: डॉ. नामवर सिंह।
10. दिनांक 26 नवंबर, 2008 को मुंबई पर हुए आतंकी हमले से मारे गये शहीदों को 3 जनवरी 2009 को शहीदों को काव्यमय श्रद्धांजली का आयोजन लक्ष्मंडी हाईट्स के बहुउद्देशीय हॉल में किया। पं. किरण मिश्र, दृगेश यादव, डॉ. जे.पी. बघेल, डॉ. पी. श्रीवास्तव, कुसुम परिहार, विनोद सक्सेना, राम बिहारी पाण्डेय, विजय अरुण इत्यादि कवियों ने रचनापाठ किया।
11. दिनांक 23 एवं 24 दिसंबर 2009 को गजानन माधव मुक्तिबोध और आज विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन। मुख्य अतिथि – डॉ. तारकनाथ बाली, अध्यक्ष डॉ. हुकुमचंद राजपाल, मुख्य वक्ता डॉ. चित्ररंजन मिश्र (गोरखपुर), डॉ. अनंत मिश्र तथा डॉ. अरूण प्रकाश मिश्र आनंद (गुजरात), डॉ. वीरेन्द्र मोहन (सागर) इत्यादि।
12. दिनांक 20 मार्च, 2010 को राष्ट्रीय काव्यगोष्ठी और सम्मान समारोह का आयोजन प्रो. डी.एन. मार्शल सभागृह, कालीन परिसर में किया। जिसमें श्री दीक्षित दनकारी (दिल्ली) प्रो.नंदलाल पाठक, डॉ. सुधाकर मिश्र, श्री. हस्तीमल हस्ती, डॉ. माधव पंडित, श्री. अनंत श्रीमाल, श्री. रासबिहारी पाण्डेय, श्री. संजीव निगम ने रचनाएँ पढ़ी।
13. समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर रमाकांत शर्मा उद्घाटक का सितंबर 2010 को सवक्तव्य काव्यपाठ आयोजित किया।
14. लोहित के मानसपुत्र शंकर देव पुस्तक का लोकार्पण समारोह दिनांक 9 जनवरी, 2011 को लक्ष्मंडी हाईट्स के बैकवेट हॉल में आयोजित किया।
अध्यक्ष डॉ. रामजी तिवारी, प्रमुख अतिथि – श्री. जाहनु बरुआ, डॉ. जगदंब प्रसाद दीक्षित, वक्ता – श्री. विनोद टिबडेवाला, श्री. आर.के. पालीवार, श्रीमती सूर्यबाला, श्री. सुशील कृष्ण गोरे, श्री. मनोज जोशी, श्री. देवाशीष शर्मा इत्यादि।
15. दिनांक 7 एवं 8 मार्च, 2011 को विभाग द्वारा आयोजित दो-दिवसीय, अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी जिनका विषय 'हिन्दी साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप' के संयोजन में सहयोग।
16. दिनांक 19 मार्च, 2011 को श्री. शरद कोकास की लंबी कविता पुरातत्वेत्ता पर परिचर्चा तथा डॉ. विजया द्वारा लिखित पुस्तक के लोकार्पण समारोह का आयोजन।
मुख्य अतिथि: श्री. लालधर मंडलोई, कवि शरद कोकास, डॉ. गजानन चव्हाण, डॉ. दामोदर खडसे, डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. सूर्यबाला इत्यादि।
17. दिनांक 23 अप्रैल 2011, को हेमंत फाउंडेशन द्वारा दिए जाने वाले विजय शर्मा कथा सम्मान, हेमंत स्मृति, कविता सम्मान 2010 का आयोजन लक्ष्मंडी हाईट्स के बैकवेट हॉल में किया। मनोज कुमार पांडेय (लखनऊ) तथा आगज खान (दिल्ली) को क्रमशः सम्मान।
डॉ. □□□□□ल, श्री. विनोद टिबडेवाला, कथाकार संजीव (दिल्ली), डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ (अलीगढ़), श्रीमती संतोष श्रीवास्तव, श्रीमती प्रमिला वर्मा, श्री. आलोक भट्टाचार्य, सोनू पाहूजा, सुशील कृष्णा मोरे (राजभाषा अधिकारी, भारतीय रिजर्व बैंक, मुंबई), सुमिता केशव तथा रासबिहारी पांडेय सम्मिलित।
18. दिनांक 8 अक्टूबर 2011 को 'आलोचना: नयी परिभाषा की तलाश' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन तथा वरिष्ठ समीक्षक डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर पर केंद्रित शब्दयोग के विशेषांक के लोकार्पण समारोह का संयोजन।

- मुख्य अतिथि: गोविंद मिश्र, अध्यक्ष – डॉ. रामजी तिवारी, प्रमुख वक्ता – डॉ. सूर्यवाला, श्री. आर.के. पालीवाल (मुख्य आयकर आयुक्त), डॉ. आनंद यादव, डॉ. माधव पंडित इत्यादि।
19. दिनांक 8 फरवरी, 2013 को हिंदी का 'अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप एवं फिजी' विषय पर एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कवि सम्मेलन का आयोजन।
प्रमुख अतिथि – श्री. ए. नायको, प्रथम सचिव, फिजी सरकार, उद्घाटनकर्ता: श्रीमती चित्रा मुद्गल, अध्यक्ष – डॉ. राजन वेळूकर, माननीय कुलगुरु, मुंबई विश्वविद्यालय, प्रमुख वक्ता - श्री. सतीश त्रिपाठी, आई.ए.एस., पूर्व अपर मुख्य सचिव, महाराष्ट्र शासन, मुंबई श्रीमती सरिता बुद्ध (मारिशस), डॉ. रामजी तिवारी, पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, डॉ. अरूणेश नीरन (समीक्षक), श्रीमती माया गोविंद (कवयित्री) इत्यादि। मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष – डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, स्थल – दीक्षांत सभागृह, मुंबई विश्वविद्यालय, फोर्ट परिसर, मुंबई।
20. दिनांक 18 फरवरी, 2013 को मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा प्रो. डी.एन. मार्शल सभागृह में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामसागर सिंह की दो कृतियों के लोकार्पण समारोह का आयोजन।
मुख्य अतिथि – डॉ. कुमुद शर्मा (प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) अध्यक्षता – श्री. नंदकिशोर नौटियाल (पूर्व कार्याध्यक्ष - महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी), विशेष अतिथि – विश्वनाथ सचदेव, डॉ. रामजी तिवारी, वक्तव्य – डॉ. राजन नटराजन पिल्लै, डॉ. दृगेश यादव इत्यादि।
21. दिनांक 20 दिसंबर 2013 को मुंबई विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग और रेनॉसा यूनिवर्सल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी।
उद्घाटक – डॉ. सूर्यप्रकाश दीक्षित, प्रमुख अतिथि – डॉ. नरेशचंद्र, आचार्य श्विश्वर जी, प्रो.सी. उपेंद्रराव (जे.एन.यू.) प्रो. उज्ज्वला झा (पुणे), प्रो. नीरज हाटेकर, डॉ. मंडपका सारदा (विशाखापटनम), प्रो. विभा सुराना, जर्मन विभाग, डॉ. आनंद नगर (मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष – डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय)
22. दिनांक 26 एवं 27 फरवरी, 2014 को साहित्य अकादमी एवं मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा शाहीर अमर शेख सभागृह, युनिवर्सिटी क्लब हाऊस, बी-रोड, चर्चगेट में पं. नरेन्द्र शर्मा जन्मशत वार्षिकी संगोष्ठी आयोजित।
उद्घाटक – डॉ. केदारनाथ सिंह, अध्यक्ष – डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, मुख्य अतिथि – डॉ. राजन वेळूकर, वक्तव्य – डॉ. सूर्यप्रकाश दीक्षित, डॉ. हरिमोहन शर्मा, गोविन्द मिश्र, अचला नागर, परितोष शर्मा, लावन्या शाह, उद्गात, डॉ. रामजी तिवारी, उदय प्रकाश, डॉ. अमरनाथ पुष्पिता अवस्थी, आलोक गुप्त, श्री. प्रकाश शुक्ल, अरुणेश, नीरज, त्रिभुवननाथ राय, डॉ. नंदकिशारे पांडेय, भारती गोरे, विनोद तिवारी, राजकुमार केसवानी, माया गोविन्द, इरशाद कामिल,, बोधिसत्व, रविकांत, नंदकिशोर नौटियाल, कांतिमोहन सोज, राजपाला हांडे, ब्रजेंद्र त्रिपाठी। मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।
23. दिनांक 18 मार्च, 2014 को मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी और महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा फिरोजशाह मेहता सभागृह विद्यानगरी में 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी शतकोत्तर स्वर्णजयंती' संगोष्ठी आयोजित।
उद्घाटक – डॉ. प्रभाकर द्विवेदी श्रोत्रिय, मुख्य अतिथि- श्रीमती चित्रा मुद्गल, अध्यक्ष – डॉ. नरेशचंद्र, वक्तव्य डॉ. दामोदर खडसे, डॉ. देवेन्द्र चौबे, डॉ. मंजुल उपाध्याय, डॉ. योजना रावत, डॉ. सतीश पांडेय, डॉ. श्रीरामपरिहार, डॉ. के.एन. तिवारी, डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय, डॉ. वेदप्रकाश दुबे, डॉ. हरिमोहन बुधौलिया, डॉ. गौरव अवस्थी, डॉ. अरविंद सिंह, श्री अनुराग तिवारी, श्री. विश्वनाथ सचदेव, डॉ. कृपाशंकर चौबे, श्री. सुंदरचंद ठाकुर, श्री. सूरज पालीवाल, डॉ. पांडुरंग पाटिल, डॉ. शंकर बुंदेले, डॉ. चंद्रदेव कवडे इत्यादि।
मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष : डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।
24. दिनांक 16 एवं 17 मार्च, 2015 को मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'जयशंकरप्रसाद शतकोत्तर रजत जयंती' राष्ट्रीय संगोष्ठी। स्थल – मराठी भाषा भवन, विद्यानगरी।

- उद्घाटक – डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, अध्यक्ष – डॉ. राजन वेळुकर (कुलगुरु, मुंबई विश्वविद्यालय),
 वक्तव्य: डॉ. श्रीनिवास पांडेय, डॉ. प्रभाकर सूत्रोतीय, डॉ. अशोक प्रियदर्शन, डॉ. योजना रावत, डॉ. कुमुद शर्मा, डॉ. नवनीत चौहान, डॉ. सूरज पालिवाल, डॉ. बुधौलिया, डॉ. जवाहर कर्नावट, डॉ. योगेश दूबे, श्री. कृष्णकुमार (संयुक्त पुलिस आयुक्त) इत्यादि।
 मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष – डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।
25. दिनांक 9 अक्टूबर, 2015 को मराठी भाषा भवन में 'समकालीन यथार्थ एवं व्यंग्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
 अध्यक्ष- डॉ. सूर्यवाला, उद्घाटक – डॉ. प्रेमजमेजय, वक्तव्य - डॉ. गौतम सान्याल, सूरज प्रकाश, डॉ. लालित्य ललित, डॉ. वागीश सारस्वत, डॉ. राकेश अचल, डॉ. सुमित प्रताप सिंह, श्री. कैलाश सेंगर, दयाशंकर पांडेय, संजीव निगम इत्यादि।
 मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष : डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।
26. संकाय संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन – 3 से 8 जनवरी को फिरोजशाह मेहता भवन विद्यानगरी में 'समकालीन साहित्य एवं मीडिया विमर्श' विषय पर किया गया।
 उद्घाटन सत्र – अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र कुलकर्णी (प्रति कुलपति – मुंबई विश्वविद्यालय), उद्घाटक – डॉ. गिरीश्वर मिश्र (कुलपति, म.गां.अं. हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा), मुख्य अतिथि: श्री. अखिलेन्द्र मिश्र (प्रख्यात अभिनेता), विशिष्ट अतिथि: एस.पी. अग्रवाल (निदेशक शिक्षण अध्ययन केन्द्र), श्री वीरेन्द्र याज्ञनिक (प्रख्यात चिंतक), श्री एस.पी. गोयल (सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाज सेवी) स्वागत एवं प्रस्तावना डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, संचालन- डॉ. आलोक पाण्डेय, आभार- डॉ. सचिन गपाट।
 आमंत्रित विद्वान – डॉ. सुनील तिवारी, डॉ. हरिशंकर मिश्र, डॉ. सुनील कुलकर्णी, श्री विश्वनाथ सचदेव, डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, श्री देविसिंह पोखरिया, श्री. अखिलेन्द्र मिश्र, डॉ. सदानन्द भोसले, डॉ. चंदनकुमार, श्री.सुंदरचंद्र ठाकुर, डॉ. व्यासमणि त्रिपाठी, श्री श्याम शंकर उपाध्याय इत्यादि।
 समापन सत्र- अध्यक्ष- प्रो. डॉ. आर. शशिधरन (कुलपति, कोच्चि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय) मुख्य अतिथि श्री राहुल देव (मानद हिन्दी सलाहकार, अध्यक्षीय शोध कदम, लोक सभा) विशिष्ट अतिथि- श्री दीपक मुकादम (कुलाधिपति नामित व्यवस्थापन सदस्य , मुंबई वि.वि.), नीरजा माधव (प्रख्यात लेखिका) श्री अमरजीत मिश्र (उपाध्यक्ष, फ़िल्म सिटी), जवाहर कर्नावट (महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा)
 मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष : डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।
27. छायावाद का पुनर्पाठ पर 15 – 16 मार्च, 2019 को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन स्थल – फिरोजशाह मेहता भवन सभागार मुंबई विश्वविद्यालय, विद्यानगरी।
 अध्यक्ष: सुहास पेडनेकर (कुलपति, मुंबई विश्वविद्यालय), उद्घाटक: डॉ. केशरीलाल वर्मा (कुलपति पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. गुजरात), बीज वक्तव्य: डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित (लखनऊ विश्वविद्यालय), मुख्य अतिथि: डॉ. तोमोको किकुची (जापान), अतिथि: डॉ. रवीन्द्र कुलकर्णी (प्रति कुलपति, मुंबई विश्वविद्यालय), श्री राकेश मिश्र, (आई. ए. एस. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी नोएडा), श्री अखिलेन्द्र मिश्र (प्रख्यात अभिनेता), श्री विजयशंकर (अध्यक्ष जयशंकर प्रसाद फाउंडेशन) वक्तव्य: डॉ. आलोक पाण्डेय, डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय, डॉ. महेन्द्र प्रजापति, डॉ. दर्शन पाण्डेय, डॉ. ऋषिकेश मिश्र, डॉ. रामविचार यादव, डॉ. महात्मा पाण्डेय, डॉ. वेदप्रकाश दुबे, डॉ. अनीता शुक्ला इत्यादि।
 मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष : डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।
28. तीन दिवसीय "अंतरराष्ट्रीय रामायण सम्मेलन" का उद्घाटन। 28,29,30 नवम्बर 2019।
 उद्घाटन:- श्री भगतसिंह कोश्यारी, (महामहिम राज्यपाल महाराष्ट्र राज्य), पूज्य भाईश्री 'श्री रमेश भाई ओझा', (राष्ट्रीय संत एवं भागवताचार्य), डॉ. सुहास पेडनेकर, (कुलपति मुंबई

- विश्वविद्यालय), डॉ. तोमोको किकुचि, (जापान), डॉ. रवीन्द्र कुलकर्णी, (प्रति कुलपति, मुंबई विश्वविद्यालय), श्री वीरेंद्र याग्निक, श्री दीपक मुकादम, डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।
- मंगलाचरण- श्री राजेन्द्र अरुण (मॉरीशस), डॉ. रामसजन पाण्डेय, (कुलपति, मत्स्यनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा), डॉ. रजनीश शुक्ल, (म.गा.अं.हि.वि.वि. वर्धा), श्रीमती डॉ. नादेज्दा (रूस), श्री सुरेश भगौरिया, डॉ. हनुमंत धायगुडे।
- प्रथम सत्र- श्री जगमोहन सिंह राजपूत, (शिक्षाविद एवं यूनेस्को के परामर्श मंडल में भारतीय प्रतिनिधि), डॉ. श्रीनिवास पाण्डेय, (पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष हिंदी, बी.एच.यू.), प्रो.देवसिंह पोखरिया (पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग कुमायू विश्वविद्यालय) डॉ. विनोद टिबडेवाल, (कुलपति, जे.जे.टी. विश्वविद्यालय), श्री सुनील केजरीवाल, डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, डॉ. बीनीता सहाय।
- द्वितीय सत्र:- पद्मश्री श्री रमेशचंद्र शाह, डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ. जयप्रकाश शर्मा, डॉ. रामेश्वर सिंह, श्री महावीर नेवटिया, श्रीनारायण अग्रवाल, प्रो. सुनील वलवी।
- तृतीय सत्र:- श्री जयंत कुमार बांठिया, आई.ए. एस., श्री राकेश मिश्र, आई.ए.एस., श्री मोतीवाल ओसवाल, श्री श्यामशंकर उपाध्याय, श्री सुशील कुमार केडिया, श्री विनोद लाठ, डॉ. आलोक पाण्डेय।
- चतुर्थ सत्र:- डॉ. कैलाशचंद पन्त, (वरिष्ठ चिंतक, प्रधान संपादक 'अक्षरा'), डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय, श्री विश्वनाथ सचदेव, श्री अश्विनी लोहानी, अखिलेन्द्र मिश्र, डॉ. दर्शन पाण्डेय।
- पंचम सत्र- डॉ. रमाकांत शर्मा 'उद्भ्रांत', (साहित्यकार), डॉ. कुमुद शर्मा (दिल्ली), स्वामी सुर्यप्रभा, (लन्दन), डॉ. श्वेता दीप्ति, (नेपाल), डॉ. वीनू अरुण (मॉरीशस), सी.ए. अनिल गोयल, प्रमोद कुमार बिन्दुलिश, डॉ. अंशु शुक्ला।
- समापन सत्र- श्री मत्पंचखंडपीठाधीश्वर पूज्य आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज, डॉ. सत्यकेतु सांकृत, (दिल्ली), श्री सुरेश चतुर्वेदी, श्री दीपक मुकादम, श्री सुरेश खान्देलिया, श्री घनश्याम पट्टाजानी, श्री अजय याग्निक, डॉ. सचिन गपाट।
- मुख्य संयोजक एवं विभागध्यक्ष: डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।
29. दिनांक 17 व 18 फरवरी 2020 को "महाकवि जयशंकर प्रसाद : एक पुनर्पाठ" विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
- उद्घाटन:- श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', (माननीय मानवसंसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार), डॉ. सुहास पेडणेकर, (कुलपति मुंबई विश्वविद्यालय), डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, (पूर्व अध्यक्ष, साहित्य अकादमी), श्रीमती चित्रा मुद्गल, (प्रख्यात लेखिका), डॉ. तोमोको किकुची (जापान) डॉ. अवधेश प्रधान, डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, डॉ. बिनीता सहाय।
- प्रथम सत्र:- डॉ. अशोक प्रियदर्शी, (पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, रांची विश्वविद्यालय), श्री राकेश मिश्र, (कवि एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी), डॉ. सुनील कुलकर्णी, (अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय जलगाँव), डॉ. सतीश पाण्डेय, डॉ. पीयूष अग्रहरि, डॉ. अर्चना त्रिपाठी, डॉ. विद्याधर जोग, डॉ. दिनेश पाठक, डॉ. सचिन गपाट।
- द्वितीय सत्र:- डॉ. रामजी तिवारी, (पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय), डॉ. पूरनचंद टंडन, (आचार्य, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. अवधेश कुमार शुक्ल (वर्धा), डॉ. हूबनाथ पाण्डेय, डॉ. रामविचार यादव, डॉ. सूर्यप्रकाश पाण्डेय, डॉ. अरुण कुमार मिश्र, डॉ. भारती सानप, डॉ. आलोक पाण्डेय।
- तृतीय सत्र:- डॉ. सदानंद राही, (आचार्य हिंदी विभाग, बी.एच.यू.) डॉ. अजित राय, (प्रख्यात रंगकर्मी, नई दिल्ली), डॉ. अखिलेन्द्र मिश्र, (प्रख्यात अभिनेता), डॉ. सदानंद भोसले, (अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय, पुणे), डॉ. अनुराग त्रिपाठी, डॉ. मिथिलेश शर्मा, डॉ. दर्शन पाण्डेय, डॉ. उषारानी राव, डॉ. ऐश्वर्या झा, डॉ. प्रतिभा राणा, डॉ. अमित शर्मा।
- चतुर्थ सत्र:- डॉ. योजना रावत, (पूर्व निदेशक, दूरस्थ शिक्षा संस्थान, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़), डॉ. सुधाकर शेडगे, (अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बाबासाहब आम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय

औरंगाबाद), डॉ मंजुला देसाई, डॉ.दत्तात्रय मुरुमकर, डॉ. प्रवीन विष्ट, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ.ऊषा मिश्रा, डॉ.हनुमंत धायगुणे।

पंचम सत्र:- डॉ. रामकिशोर शर्मा(पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, इलाहबाद विश्वविद्यालय), डॉ आनंदप्रकाश त्रिपाठी (सागर), डॉ शीतलाप्रसाद दुबे, डॉ सुरेशचन्द्र शुक्ल, डॉ.गोरख काकने, डॉ चन्दन कुमार, डॉ, दिनेश कुमार, डॉ अंशु शुक्ला।

समापन सत्र:- डॉ.रवीन्द्र कुलकर्णी, (प्रति-कुलपति, मुंबई विश्वविद्यालय) डॉ. केशरीलाल वर्मा,(कुलपति, प.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर), डॉ अखिलेश मिश्र, (सचिव, विदेश विभाग, भारत सरकार) डॉ. विनोद टिबडेवाल, (कुलपति,जे.जे.टी. विश्वविद्यालय), डॉ. सुधांशु शुक्ला, सञ्चालन- प्रा. सुनील वलवी, आभार- डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।

मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष : डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।

30. दिनांक 29 व 30 जून 2020 को “मध्यकालीन पुनर्पाठ और जम्हाणी साहित्य” विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय बेव-संगोष्ठी का आयोजन।

उद्घाटन:- प्रो. डॉ केशरीलाल वर्मा, माननीय कुलपति, (पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर), डॉ राजेश खरात, (मानविकी संकायाध्यक्ष, मुंबई विश्वविद्यालय), स्वामी कृष्णानंद जी आचार्य, (अध्यक्ष, जम्हाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर), डॉ नंदकिशोर पाण्डेय, (निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा), डॉ सुधांशु शुक्ला, (अध्यक्ष, आई.सी.सी.आर.पीठ, वारसा विश्वविद्यालय पोलैंड), डॉ करुणाशंकर उपाध्याय, (प्रो.अध्यक्ष हिंदी विभाग मुंबई विश्वविद्यालय)

प्रथम सत्र:- डॉ मदन केवलिया (से.नि.उप प्राचार्य, राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर), डॉ बाबू राम,(अध्यक्ष हिंदी विभाग, चौ. वंशीलाल वि.वि. भिवानी), डॉ शैलेन्द्र कुमार शर्मा,(कुलानुशासक एवं विभागाध्यक्ष-हिंदी विभाग विक्रम वि.वि, उज्जैन), डॉ पूरनचंद टंडन, (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय), डॉ आनंद पाटिल, (सहायक आचार्य, तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तिरवारुर),

द्वितीय सत्र:- डॉ किशनाराम विश्रोई (अधिष्ठाता, गुरु जाम्भेश्वरजी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग GJU हिसार), डॉ प्रभाकर सिंह, (सह-आचार्य, हिन्दी, काशीहिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी), डॉ सी. जय शंकर बाबू, (अध्यक्ष हिंदी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय), डॉ दर्शन पाण्डेय, (सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय), डॉ विश्वजीत कुमार मिश्र, (सहायक आचार्य, राजीव गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश)

समापन सत्र:- डॉ सूर्यप्रसाद दीक्षित,(पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय), डॉ आनंद प्रकाश त्रिपाठी, (विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं संस्कृत, डॉ हरिसिंह गौर वि.वि. सागर, मध्यप्रदेश), डॉ नवीनचंद लोहानी, (अध्यक्ष, हिंदी विभाग, चौ. चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ) डॉ. दलपत सिंह राजपुरोहित, (सहायक आचार्य, एशियाई अध्ययन विभाग, टेक्सस विश्वविद्यालय ऑस्टिन), डॉ करुणाशंकर उपाध्याय, (प्रो. एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग मुंबई विश्वविद्यालय)

मुख्य संयोजक एवं विभागाध्यक्ष : डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय।

विशेषज्ञता: भारतीय एवं पाश्चात्य कविता तथा काव्यशास्त्र के अधिकारी विद्वान, भारतीय इतिहास, पुराण, परम्परा, धर्म, दर्शन, भाषा तथा संस्कृति के गहन अध्येता। राजनीतिक-कूटनीतिक, अंतरराष्ट्रीय मामलों तथा प्रतिरक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञ। देश-विदेश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में संलग्न। हमारी पुस्तक हिंदी का विश्व संदर्भ को दैनिक जागरण ने 10 जनवरी, 2017 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर अपने सारे संस्करणों में मुख्य समाचार बनाया था।

सम्पर्क: 1102, सी-विंग, लक्ष्मंडी हाईट्स,
कृष्ण वाटिका मार्ग, गोकुलधाम, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई – 40063
भ्रमण दूरभाष – 09869511876 / 09167921043
निवास दूरभाष – 022 – 28490404

करुणाशंकर उपाध्याय आज के सबसे बड़े आलोचक हैं : चित्रामुद्गल

■ प्रवासी संदेश टीम।

मुंबई दिल्ली। डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय की साप्ताहिक पुस्तक मध्य कालीन कविता का पुनर्पाठ पर आयोजित परीचर्चा में मुख्य अतिथि के रूप में बोलाते हुए साहित्य अकादमी से पुरस्कृत उद्योग साहित्यकार चित्रामुद्गल ने कहा कि यह पुस्तक न केवल अलोचना के नए आयामों के साथ विभेदित की गई है अपितु अलोचना के नए प्रतिमानों की प्रतिष्ठा भी करती है। करुणाशंकर उपाध्याय अब आलोचकों का भी प्रतिमान बन गए हैं जिस तरह किरी सगल और बाद में नामवर सिंह की ओर देखा था कि वे अपने समय के साहित्य के बारे में क्या कह रहे हैं उसी तरह आगे वह साहित्य करुणाशंकर उपाध्याय की ओर देखा है। वे आज के सबसे बड़े आलोचक हैं। मैंने अपने जीवन के 78 साल में जो नहीं पढ़ा वह इनकी पुस्तक 'मध्यकालीन कविता का पुनर्पाठ' में पढ़ने को मिला जिससे राजकुमार प्रकाशन गई दिल्ली ने प्रकाशित किया है। इसमें आज की उलट आधुनिकतावादी अलोचना पद्धति को अकार बनकर हमारे समय के सवाल से मध्यकाल को जोड़कर देखा गया है। मैं चाहती हूँ कि इसे कई बार पढ़ें और अपने मन में चें। यह पुस्तक हिंदी साहित्य और आलोचना की अमूल्य निधि है। यह वेब छोड़ें विश्व हिंदी संघटन द्वारा आयोजित की गई थी जिसे मुद्रमुच मीडिया



चैनल 'एकेक' द्वारा प्रसारित किया गया। 29 जनवरी को शाम मध्यकाल के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई जिसमें देश भर से अनेक विद्वानों, प्राध्यापकों और शोधार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंतर्भ में मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा पुस्तक के लेखक डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने सजीव अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। इस पुस्तक के लेखन की प्रारम्भ पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि जब कोरोना कहर के कारण लॉकडाउन लगा तो उन्होंने समय का रचनात्मक उपयोग करते हुए इस पुस्तक की रचना की। हमें यह नहीं भूलना चाहिए

कि जीवन में समय और ऊर्जा सदैव कम होते जाते हैं अतः उनका अधिकतम दोहन करना चाहिए। आलोचक भी रचनाकार की तरह अपने समय और समाज की उपज होता है। हमें यह स्मरण रखना होगा कि गुण और परिमाण दोनों ही हथियों से अर्पण विभूत और उत्कृष्ट साहित्य कक्षिकाल में ही लिखा गया। वैयक्तिकरण के इस दौर में जब उत्तराधुनिक पाठ-केन्द्रित आलोचना पद्धतियों का खोलबाला है तब वह जरूरी हो जाता है कि हम भी बदलते समय, समाज एवं संदर्भों के अन्तर्गत में संपूर्ण मध्यकालीन साहित्य का पुनर्पाठ तैयार करें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर यह पुस्तक लिखी गई है। वस्तु के तौर पर दिल्ली विश्वविद्यालय

से डॉ. अलोक रंजन पट्टिय ने अपने विचार रखे और पुस्तक पर एक विस्तृत समीक्षात्मक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में जीवन और जगत के नैतिक मूल्यों को लेकर विशिष्ट संदर्भ लिया गया है जिससे मध्यकालीन समीक्षा को बल मिला है। लेखक के संदर्भों और आलोचना की विशिष्ट पद्धति को उद्घाटित करते हुए डॉ. पाण्डेय ने कहा कि वे एक दम नए हैं। आलोचक धर्म को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि आलोचक का भूल धर्म दो विरोधी धारणाओं को स्पष्ट कर उन्हें सामंजस्य स्थापित करना है और इस कार्य में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय सफल हुए हैं। डॉ. दर्शन पट्टिय ने भी वस्तु के रूप में अपना वक्तव्य में

डॉ. उपाध्याय को संस्कारित आलोचक कहा और अपनी बात को उद्घाटन में मध्यम के सम्मिलित। उन्होंने बताया कि किस तरह से किताब में इतिहास को मिथकों से अलग छंटकर देखा गया है ताकि अपने अपने बारीक पेशियाँ इससे अलग हो सकें। यह पुस्तक अत्यंत व्यापक दृष्टिकोण के साथ लिखी गई है जो मध्यकालीन प्रश्नों को आज के संदर्भ से जोड़ती है। यह पुस्तक हर वर्ग के पाठक के लिए बेहद उपयोगी है। बीज वक्तव्य के लिए पंडित बंगाल राज्य विश्वविद्यालय के हिंदी विभागध्यक्ष डॉ. अरुण होता उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि हिंदी साहित्य इस वक्त मध्यकालीन समीक्षा की कमी से गुजर रहा है। उन्होंने यह भी

बताया कि अतीत में सौटना हमारे लिए आवश्यक है और हिंदी साहित्य का अतीत मध्यकाल है। इसका पुनर्पाठ होना बेहद आवश्यक है जो बिना समय और संचयन से गुजरे नहीं हो सकता। इस संछला में इस पुस्तक का नाम मिला जाएगा क्योंकि यह मिथकों को दूर करती है और सही मानने में फल-केन्द्रित समीक्षा पद्धति का उपयोग करते हुए अनेक नए अवयव प्रस्तुत करती है। आज के परिदृश्य में बेहतर समाज की स्थापना हेतु मध्यकाल में जाना और उसकी सर्ववत्ता को सिद्ध करने में इस पुस्तक की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और मध्यकाल के विशेषज्ञ आलोचक डॉ. पूनचंद टण्डन ने कहा कि आने वाले समय में इस पुस्तक की खोजें निश्चित हैं क्योंकि यह नए चिंतन का बीज बनने है। उन्होंने यह भी बताया कि मध्यकाल की यह विडंबना रही कि इसके प्रति हमारे एक नकारात्मक दृष्टि रही जिसके कारण मध्यकाल के साथ न्याय नहीं हो पाया। इसलिए यह आवश्यक है कि एक नया चिंतन किया जाए ताकि मध्यकाल मिथकों और नकारात्मकता से उबर सके। डॉ. उपाध्याय ने गहरी अंतर्दृष्टि और व्यापक दृष्टिकोण द्वारा एक नया पाठ उपलब्ध कराया है। कार्यक्रम का सफल संचालन वेंगलूर से जुड़ी डॉ. कोमल विद्यास ने किया और कैपल से जुड़ी अमृतेज टी-जे उपस्थित ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय 21 वीं सदी के आचार्य रामचंद्र शुक्ल : त्रिपाठी

■ प्रवासी संदेश टीम।

मुंबई। गत दिनों हिंदी साहित्य भारती द्वारा राष्ट्र का बंदन कार्यक्रम का अतिथि कार्यक्रम के अंतर्गत मुंबई में हिंदी के आचार्य डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय के व्यक्तिगत और वृत्तिय पर आयोजित श्रेष्ठ गीत सम्मेलन हुए। कार्यक्रम के अंतर्गत में हिंदी साहित्य भारती का कुल गीत प्रस्तुत किया गया। वेकल के कठमांडू विश्व विद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. श्वेता दीक्षी ने उपस्थित अतिथियों का परिचय दिया और डॉ. उपाध्याय को एक सुचिंतित अलोचक, कुशल प्राध्यापक, विदेश एवं प्रतिष्ठित समारोहों का महान जनकार बनलागा।

सर्वप्रथम परिचय में अपना वक्तव्य देते हुए त्रिपाठी महाविद्यालय, गढ़ी दिल्ली के प्राध्यापक डॉ. दर्शन पाण्डेय ने डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय के तीन आध्यात्मिक, पत्रिकात्मिक प्रमुख, व्यक्तिगत के बहुचर्चित संदर्भ और अलोचक के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने डॉ. उपाध्याय के अधिक विचारों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'हिंदी का विषय संदर्भ' में हिंदी को विषय में सामाजिक प्रमुख होने वाली भाषा निरूपित किया है और यह ही तथ्यपरक अंकड़े दिए हैं। आपने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी नामक अध्यक्ष में हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनने के लिए इस वैधानिक सुरुष दिए हैं और कहा है कि इस समय विश्व का हर छोटा बोलता हिंदी बोलता है। यदि हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ

में आधिकारिक भाषा के रूप में प्रविष्ट रहित अतीत नहीं है तो यह विश्व के हर छोटे व्यक्ति के मानवधिकार का उल्लंघन है। आपका लेखन न केवल हिंदी की शक्ति और संभावनाओं का निर्देश करता है अपितु यह हिंदी को सार्वजन्य न्यायालय, उच्च न्यायालय और संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लक्ष्य की समझता है। इसके साथ ही आप हिंदी के संयुक्त परिवार की रक्षा के लिए भी कुतर्काल्य हैं। आपका स्पष्ट मानना है कि बोलियों का संरक्षण व संवर्धन होना चाहिए लेकिन हिंदी की कोमल पर नहीं। आप बोलियों के लिए अलग से अकादमी बनाने का सुझाव देते हैं और लिखते हैं कि बोलियाँ भी हिंदी के संयुक्त परिवार में ही सुरक्षित हैं। हिंदी ही उन्हें अछेरी और मंदरिन के आक्रमण से बच सकती है।

इसके बाद मुख्य वक्ता और हरियंदा गौर विश्वविद्यालय के संस्कृत व हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनंद प्रकाश त्रिपाठी ने डॉ. उपाध्याय को 21 वीं सदी का आचार्य रामचंद्र शुक्ल बताया। आपने इनकी पुस्तकों मध्यकालीन कविता का पुनर्जाद, साहित्य और संस्कृति के संस्कार, पाश्चात्य काव्यविचार: अधिजात्यवाद से उत्तर आधुनिकतावाद तक तथा आधुनिक कविता का पुनर्जाद से उद्धार देते हुए कहा कि डॉ. उपाध्याय ऐसे अलोचक हैं जो शुक्ल जी और द्विवेदी जी को उद्धृत करने के बखबुद आवश्यकतानुसार टीनी की मान्यताओं से उद्धरते हैं और



उसमें बहुत कुछ नया जोड़ते हैं। आज हमारी बात लोगों की आकर्षकता पर सकती है लेकिन मैं इनकी अगामी आलोचना कृतियों को देखते हुए मैं अपने बात महान चिंतन और विवेक के बाद कह रहा हूँ। द्विवेदी ने उपाध्याय को बहुत और बहुचर्चित अलोचक कहते हुए कहा कि इनके अध्ययन और लेखन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसमें दर्शन, समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र, अंतरराष्ट्रीय मामलों, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र और ज्ञान- विज्ञान के समग्र क्षेत्रों का समावेश है। आप गौरवान्वा से लेकर संयुक्त मध्यकालीन कविता का नया खंड तैयार करते हैं। इसी तरह आधुनिक काव्य और समकालीन कविता का भी नए प्रतिमानों के अलोचक में निर्वचन करते हैं। उन्होंने जिस महर्षि और गंधीता के साथ पाश्चात्य काव्यविचार के लक्षण समी आंदोलनों का विश्लेषण किया है वह हिंदी काव्यलोचन के क्षेत्र

में अग्रिम उपलब्धि है इनके प्रिय कवि जयशंकर, तुलसी और जयशंकर प्रसाद हैं और इनके विवेचन में उपाध्याय जी अद्भुत मौलिकता का परिचय देते हैं। उन्होंने कविसहित्य के विवेक में नई पाठ- केन्द्रित अलोचन पद्धति का परिचय देते हुए नूतन स्थापना प्रस्तुत की हैं। एक व्याख्यान में इनके अलोचनपरक लेखन का मूल्यकन संघन नहीं है। इनसे हिंदी जगत को बहुत समृद्धि है। इसी क्रम में चंडीगढ़ से जुड़े सीनर वक्ता डॉ. अरविंद द्विवेदी ने कहा कि प्रोफेसर उपाध्याय अलोचन के बाद पहले बड़े अंतरांतरास्तिक साहित्यिक हैं जिसकी साहित्य, संस्कृति, दर्शन, इतिहास, धर्म, पुरुष, ज्ञान-विज्ञान, प्रतिक्रिया, भारतीय और पाश्चात्य आलोचना समेत समकालीन विमर्श तक समान प्रति है। आप रक्षा व विदेश मामलों पर जिस अधिकार के साथ लिखते हैं तथा व्यक्तिगत रूप से देखते हैं वह हठप्रवृत्ति का चाल है। आप

पर मां भारती की अद्भुत कृपा है। इन पर मैंने शिक्षा भी है और वर्तमान दौर की सबसे बड़ी लेखिका विशासुता ने इनके संबंध में टीका की कहा है कि करुणाशंकर उपाध्याय आज के सबसे बड़े अलोचक हैं। आप अपने व्यपक दृष्टिकोण और महान अध्ययन के कारण आलोचकों के प्रतिमान बन गए हैं। इनकी पद्धति, वैज्ञानिकता और विविध क्षेत्रों की गहरी पकड़ आश्चर्य प्रदान करती है। मैं क्षम्य करता हूँ कि डॉ. उपाध्याय समस्त अलोचना दृष्टियों के समन्वय एवं भारत- संघ तथा विश्व मानवतावादी दृष्टि से हिंदी साहित्य के वैश्विक इतिहास का लेखन करें, उसका नया पाठ तैयार करें। यह रक्षा मैं उनकी उर्जा और क्षमता को देखकर कह रहा हूँ। इसमें कोई प्रशंसा का भाव नहीं है। डॉ. उपाध्याय ने अपने संतुष्ट में हिंदी आलोचना को नूतनता पर प्रहार करते हुए कहा कि एक विशिष्ट विचारधारा के स्त्री द्वारा हिंदी के और भारतीयता के

गौरव बोध की उपेक्षा रखने का सोचा- समझा यह संभव किमं भाषा है। यह बहुत बड़ी विमर्शिता है कि उपाध्याय की रचनाएं वैश्विक विमर्श से बहर हैं और द गीत ऑफ इमाल विमर्श 'जैती वाचन्य रचनाएं विश्वस्तरीय विमर्श के केंद्र में आती हैं। हमें इस विषय को तोड़कर हर रचना को उसके शक्ति के अनुसार न्याय दिलाना होगा। हमारे समक्ष हिंदी आलोचना को विश्वस्तरीय विमर्श का हिस्सा बनने की चुनौती है जिसे स्वीकार करके ही हम आलोचना क्षेत्र में प्रतिष्ठित हुए हैं। अपने अध्ययन वक्तव्य में हिंदी साहित्य भारती का अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व शिक्षा व कृषि मंत्री डॉ. रवींद्र शुक्ल ने कहा कि हिंदी साहित्य भारती इस समय विश्व की सबसे बड़ी साहित्यिक संस्था बन चुकी है और दुर्दैवसे ही की सदावासी में कहे तो जे पान का बीड़ा चढ़ाने वाला खेड़ा होत है। यही संभावित बनत है। डॉ. उपाध्याय हिंदी आलोचना के ऐसे ही सेनापति हैं। उनसे आलोचना के क्षेत्र में व्याप्त अपेक्षा को मिटावे की अपेक्षा है। आप शायद ही, स्वयं और खंडित रहकर अपने नैर- और विवेक से हिंदी साहित्य के साथ न्याय करें, ईश्वर से यही प्रार्थना है। आपने जता इतिहास आपके नाम से जाना जाय, प्रभु से यही प्रार्थना है। राजस्थान से विदुषी साहित्यिक डॉ. शिंपका कौशिक ने कार्यक्रम का सुन्दर संचालन करते हुए अंत में आपका प्रकट किया।